निर्णयसागरप्रेस-प्रकाशित

संस्कृत, हिंदी, गुजराती पुस्तकोंका

सूचीपत्र

संस्थापक सेठ जावजी दादाजी जे. पी.

इस सूचीपत्रमें वेद, कर्मकाण्ड, पुराण, इतिहास, वेदान्त, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, व्याकरण, निरुक्त, कोश, काव्य, गद्य, छन्द, नाटक, चम्पू, भाण, अलंकार, नाट्य, वैद्यक, ज्योतिष, स्तोत्र, प्रकीर्ण (फुटकर), जैनग्रंथ, काव्यमाला, संस्कृत-इंग्लिश नोट्सकी पुस्तकें, शालोपयोगी इंग्लिश पुस्तकें, और रामायण, आदि उपयुक्त ग्रंथ हैं।

१९५३

सूचना ।

—:*:—

व्यापारी महाशयोंसे सविनय प्रार्थना है, कि कृपापूर्वक हमारे इस सूचीपत्रको आदिसे अंततक पढनेका परिश्रम करें। कारण कितनेही नये छपे हुए ग्रंथ इसमें दाखल किये गये हैं और बहुतसे ग्रंथोंकी कीमत भी महर्घताके वजहसे बढ़ गई है।

१ हम अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिंदुस्तानी, मराठी, गुजराती और पाठशालोपयोगी सब पुस्तकें नगद दाम भेजनेसे अथवा वेल्यूपेबिलद्वारा मंगानेसे भेज सकते हैं।

२ जिन महाशयोंको इस सूचीपत्रमें लिखी हुई पुस्तकोंके विषयमें अथवा अन्य व्यवहारके विषयमें पत्रव्यवहार करना हो, वे अंग्रेज़ी, हिंदी और संस्कृत, इन भाषाओंमें पत्र लिखें और स्पष्ट अक्षरोंमें अपना नाम, गाम, जिला, डाकखाना, स्टेशन आदि लिख भेजें। उर्दू, फारसी आदि अन्य भाषाओंमें पत्रव्यवहार नहीं करना चाहिये। और टिकट लगाकर पत्र भेजना चाहिये। बैरंगचिट्ठी नहीं ली जायगी।

३ ग्राहकोंसे प्रार्थना है, कि पुस्तकोंका दाम और डाकमहसूल हुंडी या मनीऑर्डरद्वारा जैसे उनको सुगम पड़े वैसे भेजें और ६ आने रजिस्टरीके वास्ते अधिक भेजें, जिससे पार्सलकी जिम्मेदारी डाकखानेपर रहेगी। नोट और टिकटकी चिट्ठियां रजिष्टरी करके भेजनी चाहिये।

नोट—मे १९५३ से डाक महसूल दुगुना हुआ है

Prem Datt Sharma Shastri

निर्णयसागर प्रकाशित
संस्कृत पुस्तकोंका सूचीपत्र.

वेदग्रन्थ ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
आपस्तंबशाखोक्त देवेसंज्ञकमंत्र.	०	२	०	॥
आश्वलायनगृह्यसूत्र.	०	८	०	१
उदकशांति—शौनकीय(ऋग्वेदीय) प्रयोगसहित.	०	८	०	१
उदकशांति—(आपस्तंबीय)प्रयोगसहित.	०	८	०	१
ऋग्वेदोक्त देवेसंज्ञकमंत्र.	०	२	०	॥
ऋग्वेदमंत्रसंहिता....	१	४	०	२
ऋग्वेदसंहिता—परिभाषा-सर्वानुक्रम-स्वाहाकार-प्रयोग-ऋग्विधान-मंत्रकोशादियुक्त है.	६	०	१	०
ऐतरेयोपनिषत् (अरणें.)—आश्वलायनीय.	०	८	०	१
ऐतरेयब्राह्मण.	२	०	०	२
गणपत्यथर्वशीर्ष.	०	२	०	॥
पवमानपंचसूक्त.	०	१४	०	२
पुरुषसूक्त.	—			
रुद्र—(नमकचमकात्मक अध्याय.)	०	६	०	१
मंत्रसंहिता-हिरण्यकेशीय—यह हिरण्यकेशीयशाखाके याज्ञिकोपयोगी मंत्रोंका एक अनोखा संग्रह है.	१	४	०	३

कीं. रु. आ. डा. रु. आ.

शिक्षादिवेदषडंगानि—नाम, शिक्षा, ज्योतिष, छंद, निघंट, निरुक्त-पूर्वषङ्क, उत्तरषङ्क; आश्वलायनश्रौतसूत्र-पूर्वषङ्क, उत्तरषङ्क, आश्वलायनगृह्यसूत्र संपूर्ण, अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) यह ६ विषय इसमें हैं. ३ ० ० ५

शिक्षादिवेदांगचतुष्टय—याने शिक्षा, ज्योतिष, छंद, निघंट, ऐसे ४ विषयोंका संग्रह है. ० ८ ० १

शुक्लयजुर्वेदमाध्यंदिनसंहिता—ग्रंथांतमें अष्टविकृति, याज्ञवल्क्यशिक्षा, प्रतिज्ञा, सर्वानुक्रमानुवाकसूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र, मन्त्रकोश वगैरा विषयभी हैं. १० ० १ ४

शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी—स्थूलाक्षर. ० १२ ० १

शुक्लयजुर्वेदसंहिता—उवट-महीधरभाष्ययुता यजुःशाखीयविविधपरिशिष्टयुता च. इसके दरेक मन्त्रका दो भाष्य जोडकर अंतमें पारायणक्रम, प्रतिज्ञासूत्र, याज्ञवल्क्यशिक्षा, मन्त्रकोश जोड दिये हैं. १२ ० १ ०

श्रीसूक्त. ० २ ० १

सौरसूक्त. ० २ ० १

कर्मकाण्डग्रन्थ।

नित्यनैमित्तिककर्मसमुच्चय—(शुक्लयजुर्वेदी) ... ५ ८ ० १२

आह्निकचंद्रिका—सायनमन्त्रभाष्यसहित. (ऋक्शाखियोंका ग्रंथ) आचारचन्द्रिका इसका ही नाम है. इसमें सौर, रुद्राध्याय, रुद्रसूक्त, विष्णुसूक्त, देवीसूक्त, श्रीसूक्त, गणपतिसूक्त सायनाचार्यभाष्यसह, और गणपतिअथर्वशीर्ष सभाष्य इतने विषय हैं. —

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
उत्सर्जनोपाकरणविधि—(ऋग्वेदीय श्रावणी)	०	८	०	१
ऋग्वेदोक्त नित्यविधि.	१	४	०	४

कुण्डार्क

१ मरीचिका, २ दीधिति, ३ पद्मिनी, ४ नौका, ५ मिताक्षरा और ६ सुप्रभा व्याख्या

यह ग्रंथ यज्ञोंके अनेक तरहके कुण्ड, वेदी तथा कुंडमंडप बनानेमें सर्वोत्कृष्ट है इसमें कुंडोंका गणितभाग विस्तारसहित लिखकर कुंडोंकी आकृतियां, यज्ञमंडप, तोरणों, दिशाओंकी पताका, ध्वज, इत्यादि सब विषयोंका खुलासा किया है. जिससे याज्ञिकजनोंको सुविधा होगी ऐसा विश्वास है. २ मू. रु., डा. ८ आ.

कुंडरत्नावली-सटीक—(कुंडोंके ६४ चित्रोंसहित)	—			
गणेशसहस्रनामावलि.	०	८	०	१
चरणव्यूह.	०	२	०	१
छन्दोगाह्निकम्—(सामवेदीय).	०	१२	०	२
त्रिकालसंध्या—(ऋग्वेदीय).	०	४	०	१
त्रिकालसंध्या—हिरण्यकेशीय (आपस्तंबीय).	०	२	०	१
त्रिकालसंध्या—(यजुर्वेदीय).	०	३	०	१
त्रिसुपर्ण.	०	२	०	१
दत्तात्रेयसहस्रनामावलि.	०	८	०	१
दुर्गासप्तशती (चंडीपाठ)—देवीसूक्त, रहस्य-त्रय सप्तचंडी-सहस्रचंडीविधि, पल्लवविधि वगैरह ४८ विषयोंसे युक्त; स्थूलाक्षर कपडेकी जिल्द.	४	०	०	६
दुर्गासप्तशती—उपरोक्त ४८ विषय, खुला पत्रा.	३	८	०	६
दुर्गासप्तशती—(कपडेकी जिल्द मध्यमाक्षर)	२	१२	०	८

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
दुर्गासप्तशती—(साधी कागदी मध्यमाक्षर) इसमें भी ऊपरके समान पूर्वांग उत्तरांगविधि आदि ४८ विषय हैं. ३२ पेजी....	२	४	०	६
दुर्गासप्तशती—यह कुञ्जिकास्तोत्र और ४८ विषय-युक्त है. (सूक्ष्माक्षर) ६४ पेजी कपडेकी जिल्द.			—	
दुर्गासप्तशती—बहुत छोटा तावीजी कपडेकी गुटका.	०	८	०	१
देवीसहस्रनामावलि.	०	८	०	१
नित्यकर्मपद्धति.			—	
पञ्चायतनदेवताओंकी पृथक् पृथक् अष्टोत्तर-शतनामावलि.	०	६	०	१
पूजासमुच्चय—(इसमें अनेक प्रकारके १०५ विषय) न्यास, बरसमें होनेवाली तरह तरहकी पूजायें, विविध सहस्रनामावली, और अष्टोत्तरशतनामावली हैं.	२	०	०	४
प्रतिसांवत्सरिक श्राद्धप्रयोग.	०	८	०	१
प्रयोगपारिजातः—षोडशसंस्कारकाण्डम् ।	७	०	०	१२
प्रयोगरत्न—नारायणभट्टी—उत्तरनारायणभट्टी—अन्त्येष्टिसह । (ऋग्वेदीय) समंत्रक । उपरोक्त ग्रंथ प्राचीन ग्रन्थोंसे शुद्ध किया गया है और उसमें विशेष यह है कि स्मार्त यज्ञपात्रोंके २८ चित्र और बड़े २ याज्ञिक विद्वानोंके द्वारा परिशोधित करवाकर सप्तपाकसंस्थाओंके पृथक २ प्रयोग बतलाये हैं.	३	८	०	८
प्रातःस्मरण.	०	२	०	१

की. रु. आ. डा. रु. आ.

ब्रह्मकर्मसमुच्चय, ऋग्वेदीय—(विषय ३८८) ५ ० ० १२

ब्रह्मकर्मसमुच्चय, हिरण्यकेशीय–(विषय ३८८)
तैत्तिरीयशाखी ब्राह्मणोंके लिये यह अपूर्वग्रंथ है. ५ ० ० ८

शुक्लयजुःशाखीयकर्मकाण्डप्रदीपः ।

(विविधरङ्गरञ्जितमण्डलैरन्यैश्च सहितः)

यह माध्यंदिनशाखीयोंको अत्यंत उपयोगी अपूर्व ग्रन्थ है. इसमें क्रमसे–परिभाषा १ संस्कार २ आह्निकाचार ३ मिश्रप्रयोग ४ और अन्त्येष्टि ५ ऐसे पांच प्रकरण हैं और कातीय श्रौतसूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र आदि शाखानुकूल प्रमाणग्रन्थोंके आधारसें प्रत्येक प्रकरणमें यजुःशाखीयोंको आवश्यक ऐसे अनेक प्रयोग तथा शास्त्रार्थ सप्रमाण जोड दिये हैं. **कीमत ७ रुपया, डाक १ रुपया**

रामार्चनचंद्रिका—परमहंसश्रीमदानन्दवन-
प्रणीत. वैदिक और तांत्रिक प्रयोगसहित. १ ८ ० ४

ललितोपाख्यानम् ।

ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्डान्तर्गतम् । अध्यायाः ४०

श्रीमत्त्रिपुरसुंदरीजगदंबाके अवतार शत्रुपराजय आदि अनेक लीला इस उपाख्यानमें अच्छीतरह वर्णन किया है. इसके पठनपाठनसे सप्तशतीसरीखा फल रोगनाश, शत्रुपराजय, आदि मनोरथसिद्धि होती है. मूल्य —

लक्ष्मीपूजनप्रयोग—(यजुर्वेदीय) १ ० ० २

ललितास्तवमणिमाला. ० ८ ० १

विष्णुसहस्रनामावलि. ० ८ ० १

विवाहपद्धति—(यजुर्वेदीय.) .... —

वैश्वदेव—बलिहरणमंडलसहित. ० २ ० १

शान्तिकाण्डप्रदीप—(यजुःशाखीय) यह ग्रंथ
सब तरहके शान्तियोंका एक अनोखा संग्रह है. २ ० ० ६

शिवसहस्रनामावलि. ० ८ ० १

सर्वपूजा—देवपूजाका अत्यावश्यक ग्रंथ..... ० ४ ० १

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
सर्वदेवसामान्यपूजा.	०	८	१	०
सूर्यसहस्रनामावलि.	०	८	०	१
संस्कारकौस्तुभ—अनंतदेवभट्टविरचित (पोथी) आपदेवके पुत्र अनंतदेवजीने यह याज्ञिक ग्रन्थ बनाया है. इसमें संस्कारप्रयोग, जननशांति और उसका निर्णय अनेक प्रमाणोंकी मीमांसा करके शास्त्रार्थसे सिद्ध किया है.			—	
हिरण्यकेशीय—(आपस्तंबीय) नित्यविधि.	१	४	०	२

पुराण—इतिहासग्रन्थ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
अध्यात्मरामायण—मूल—(कपडेकी जिल्द)	२	०	०	६
गरुडपुराण—सारोद्धार	२	१२	०	६
मूलरामायण.	०	२	०	१
रामवनगमनम्—(वाल्मीकिरामायणान्तर्गत) यह बनारस गव्हर्नमेंट संस्कृत प्रथमा परीक्षामें निर्धारित, तिलक, भूषणा और पं. नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ' कृत सरलानामक अभिनव तथा सुगम संस्कृत टीका, और अन्वय-सर्गतात्पर्यसे युक्त है. यह ग्रंथ पुरुष, स्त्री एवं पुत्र और बन्धुओंका नैतिक कर्तव्य एवं मातृ-प्रेमका दिग्दर्शन करनेवाला एक अनोखा ग्रंथ है. प्राथमिक संस्कृत पढनेवालोंके लिये आशीर्वादरूप है.	१	१२	०	४
वाल्मीकिरामायण—रामकृत तिलकटीकासहित			—	
वाल्मीकिरामायण—(मूलमात्र)			—	
विदुरनीति—श्रीमहाभारतके उद्योगपर्वमें विदुरजीने राजा धृतराष्ट्रको यह उपदेश किया है.	०	८	०	१
विनायकमाहात्म्य—इस ग्रंथमें गजाननके अवतारका चरित्र अपूर्व छह प्रकारसे वर्णन किया है.	१	०	०	२
श्रीमद्भागवत—(बडा अक्षर) श्रीधरी टीका और टिप्पणसे सहित. (दूसरी आवृत्ति.)			—	

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
श्रीमद्भागवत—मूल. (पहलेसे बडा टाईप).	९	०	०	१२
सत्यनारायणपूजा तथा कथा मूल.	०	४	०	१
सुंदरकांड मूल.	२	८	०	४

वेदान्तग्रन्थ।

अद्वैतसिद्धिः। मधुसूदनीया।

विठ्ठलेशीयव्याख्योपबृंहित—गौडब्रह्मानन्दीव्याख्यासनाथी-कृता, बलभद्रप्रणीतसिद्धिव्याख्या—न्यायामृताऽ-द्वैतसिद्धितरङ्गिणीलघुचन्द्रिकासंग्रहश्च।

अद्वैतसिद्धि यह ग्रन्थ अद्वैत प्रमेयबहुल और अत्यन्त गंभीरार्थ है. इसकी व्याख्या **लघुचन्द्रिकाही गौडब्रह्मानन्दी** तथा उसका व्याख्यान **विठ्ठलेशीय** विस्तृक और सुबोध है. और दूसरी **सिद्धिव्याख्या** बलभद्रकी भी अत्युत्तम है. प्रतिप्रकरणके अन्तमें चतुर्ग्रन्थसिद्धान्तसंग्रह और अन्तमें मधुदसूदनका **अद्वैतरत्नरक्षण** नामक छोटा ग्रन्थ जोड दिया है. **की. २० रु., डा. २ रु.**

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
अद्वैतसिद्धांतसारसंग्रह.	०	१२	०	२
अध्यात्मविद्योपदेशविधिः—और किंज्योतिःपद्य (सटीक) शंकराचार्यकृत, यह संवादात्मक छोटासा वेदान्तग्रंथ खास वेदान्तका परिशीलन करनेवालोंके लिये अतीव उपयोगी है.	०	६	०	१
अनुभूतिप्रकाश—विद्यारण्यस्वामिकृत.	२	०	०	४
अवधूतगीता—(साधी जिल्द)	०	६	०	१
अवधूतगीता—(रेशमी जिल्द)	१	०	०	१
अष्टाविंशत्युपनिषदः—(उपनिषद् २८, गुटका) इसमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर, कैवल्य, जाबाल, गर्भ, नारायणाथर्व, नारायण, बृहज्जाबाल, कौषीतकी, सूर्य, कृष्ण, हयग्रीव, दत्तात्रेय, रुद्राक्ष, महावाक्य, कलिसंतरण, जाबालि, बह्वृच, मुक्तिक, वगैरह २८ उपनिषदोंका संग्रह है.	२	०	०	८

	की. रु. आ.	डा. रु. आ.
ईशादिविंशोत्तरशतोपनिषदः—यह १२० उपनिषदोंका अनोखा संग्रह है.	१० ०	० ८

ईशादिदशोपनिषद्भाष्यम् । (पुष्टिमार्गीयं) गोपालानन्दस्वामिकृतम् ।

सर्व उपनिषदोंमें ईशादिदशोपनिषद सुतरां श्रेष्ठ हैं. उपनिषदोंपर अन्य बडी बडी भाष्यें और व्याख्यायें हैं; तथापि उनका संग्रह करना सब लोगोंको अशक्य है. उपनिषदोंका अर्थज्ञान होना अत्यंत अवश्य है सो इस सुबोध और सुलभ ग्रंथसे सहज होगा. **मू. ७ रु. डा. १२ आ.**

उपदेशसाहस्री ।

गद्यपद्यरूपपूर्वोत्तरभागात्मिका ।

यह अद्वैतवेदान्तसिद्धान्तसे भरा हुआ सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ श्रीभगवत्पादाचार्यने बनाया है. इसका परिशीलन करनेसे वेदान्तका ज्ञान सुलभ हो जाय । इसके आजतक गद्य और पद्य ऐसे दो भाग पृथक् छपे थे वह ग्राहकोंके सुविधाके लिये अब एकही भागमें छपा है. **मूल्य २ रु., डाकमार्ग ४ आना.**

तत्त्वप्रदीपिका–चित्सुखी ।

श्रीमच्चित्सुखाचार्यमुनिवरविरचिता परमहंसप्रत्यग्रूपभगवत्प्रणीतया नयनप्रसादिनीव्याख्यया सहिता ।

सर्वांगपरिपूर्ण यह ग्रन्थ अद्वैतसिद्धान्तका प्रकाशक और व्युत्पादक है. इसके ४ परिच्छेद (प्रकरण) हैं. इसके परिचयसे व्यासंग करनेवाला अद्वैतवेदान्तका सिद्धान्ती हो सकता है. —

	की. रु. आ.	डा. रु. आ.
पंचदशी—रामकृष्णविरचित टीका सुबोध टिप्पण, श्रुतियोंका स्थाननिर्देशक कोश, श्लोक-विषयानुक्रम वगैरा परिशिष्टोंसे युक्त.	६ ८	० ८
पंचरत्नी गीता—इसमें भगवद्गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति और गजेंद्रमोक्ष इतने प्रकरण हैं. (कपडेकी जिल्द स्थूलाक्षर)	२ ८	० ४
पंचरत्नी गीता—(कापडी मध्यमाक्षर)	—	
पंचरत्नी गीता—(साधी)....	१ ८	० ३
पंचरत्नी गीता—६४पे.(कपडेकी जिल्द सूक्ष्माक्षर)	१ ०	० ३

की. रु. आ. डा. रु. आ.

पातञ्जलयोगसूत्रम् ।

भावागणेशीयवृत्ति—नागोजीभट्टीयवृत्तिसहितम् ।

यह यौगिक ग्रंथोंमेंका एक छोटासा उत्कृष्ट प्रकरणग्रंथ है. इसमें १ समाधिपाद, २ साधनपाद. ३ विभूतिपाद और ४ कैवल्यपाद ऐसे चार प्रकरण हैं. उनका अर्थ नामसेही स्पष्ट होता है. मू. १। रु., डा. ४ आ.

पाण्डवगीता. ० २ ० १

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् ।

भाष्यरत्नप्रभा-भामती-न्यायनिर्णयव्याख्यासहितम् ।

यह अद्वैतवेदांतशास्त्रका मूर्धन्य ग्रंथ सुप्रसिद्ध है. भाष्य अत्यंत गंभीरार्थक होनेसे उसके अर्थका ज्ञान भाष्यरत्नप्रभासेही विशद होता है. विशेष पांडित्य भामती प्रतिपादित है और सुवोध सविस्तर खुलासा न्यायनिर्णय(आनंदगिरीय) में आया है. इसके महत्त्वके वारेमें ज्यादा लिखनेका प्रयोजन नहीं.

की. १८ रु. डा. १॥ रु.

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्—मूलमात्र, सटिप्पण । ८ ० ० १२

ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम् ।

भामती-कल्पतरु-परिमल-व्याख्यासमलङ्कृतम् ।

इन तीन टीकाओंके साथ यह ग्रंथ बहोतही वर्षोंके पहले छपा था, जिसकी एकमी प्रति प्राप्य न थी, ग्राहकमहाशयोंके खास विनंतीसे यह पुनर्मुद्रण श्रुतिकोशादिपरिशिष्टोंके साथ प्रसिद्ध किया है. **मूल्य २५ रुपिया, डा. १॥ रु.**

श्रीभगवद्गीता ।

(व्याख्याष्टक ८ मण्डिता) २ री आवृत्ति.

१ शांकरभाष्य २ आनन्दगिरिव्याख्यासहित ३ नीलकण्ठी ४ मधुसूदनी ५ भाष्योत्कर्षदीपिका ६ श्रीधरी ७ अभिनवगुप्तपादाचार्यव्याख्यायुत तथा ८ गूढार्थतत्त्वालोक(मधुसूदनीव्याख्याविवरण) श्रीधर्मदत्तशर्मा (प्रसिद्धबच्चाशर्मा) मैथिलप्रणीतसहित । **मूल्य १८ रु., डा. १ रु.**

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
भगवद्गीता–शंकरानंदीटीकासहित, तृतीयावृत्ति । यह व्याख्या परमहंस श्रीमच्छंकरानन्दस्वामीजीने अति उत्तम सुविस्तृत बनाई है. इसमें गीताका हृद्य अर्थ सुलभरीतिसे वर्णन किया है.	५	०	०	८
भगवद्गीता—(श्रीधरीटीकासह) बुकसाईज.	२	०	०	६
भगवद्गीता—(खुला पत्रा स्थूलाक्षर)	१	०	०	४
भगवद्गीता—(कपडेकी जिल्द स्थूलाक्षर)....	१	४	०	४
भगवद्गीता—(कपडेकी जिल्द मध्यमाक्षर)	०	१४	०	४
भगवद्गीता—(कपडेकी जिल्द सूक्ष्माक्षर) ६४पेजी	०	१२	०	४
भगवद्गीता—(मध्यमाक्षर) साधी.....	०	८	०	१
भगवद्गीता—बुकसाईज (मध्यमाक्षर) साधी	०	८	०	१
भगवद्गीता—(बहुत छोटी कपडेकी गुटका).	०	१२	०	१
भगवद्गीता—सप्तश्लोकी.	०	१	०	॥
भगवद्गीतानुक्रमणिका, श्लोकप्रतीकसूचिसहित	०	२	०	१
महावाक्यरत्नावलि—वेदांतप्रकरण, मूलमात्र. इसके २० प्रकरण हैं. इसमें अष्टोत्तरशत उपनिषदोंके सारभूत वाक्योंका संग्रह है.	०	६	०	१
मन्त्ररत्नमञ्जूषा—श्रीमत्त्रिविक्रमभट्टारकप्रणीता । यह मंत्रशास्त्रका एक अनोखा प्रकरणग्रंथ है. इसमें १ दीक्षापटल, २ सपर्यापटल, ३ सोमसूर्याग्निमंत्रपटल, ४ शैवमंत्रपटल, ५ शक्तिमंत्रपटल, ६ वैष्णवमंत्रपटल, ७ पारिप्लवपटल ८ यंत्रपटल ऐसीं आठ प्रकरण हैं और सब पटलोंका स्पष्टीकरण तुरंत ध्यानमें आवे ऐसा किया है.	१	०	०	४

	कीं. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
योगवासिष्ठ—श्रीवाल्मीकिमुनिकृत वासिष्ठमहारामायणतात्पर्यप्रकाशव्याख्यासहित दो जुदे भागोंमें छपा है. पूर्व तथा उत्तर ऐसे दो रामायणोंमें उत्तररामायणही **योगवासिष्ठ** अथवा **वासिष्ठमहारामायण** इन नामोंसे सुप्रसिद्ध है. इस ग्रन्थमें वसिष्ठऋषि और भगवान् श्रीरामचंद्रजीके संवादरूपसे अद्वैत ही सब सिद्धांतोंका ध्येय है ऐसे सरल उदाहरणोंसे अद्वैत वेदांतका प्रतिपादन किया है.	२५	०	२	०

श्रीमच्छंकराचार्यकृत—

१ रत्नपञ्चकं (सोपानपञ्चकं) सभाष्यं,

२ विद्वदनुभवानन्दलहरी (शिवानन्दलहरी), ३ शतश्लोकीसारसंग्रहः, ४ कौपीनपञ्चकम्, ५ एकोविष्णुपद्यस्य श्रीनिवासाचार्यकृतव्याख्यानम् ।

इन पांच अपूर्व विषयोंका संग्रह है. **मू. ६ आ. डा. १॥ आ.**

रामगीता और रामगीतामाहात्म्य.	०	२	०	१
लघुयोगवासिष्ठ—आत्मसुखकृत, वासिष्ठचंद्रिकाटीकासहित. बुकसाईज आवृत्ति दूसरी.	५	०	०	१२
ललितासहस्रनाम मूल.	०	८	०	१
ललितासहस्रनाम—भास्कररायप्रणीतसौभाग्यभास्करभाष्यम् । इसके ऊपर श्रीभास्कररायने भाष्य बनाते वख्त एकएक नामके अनेक मंत्रगर्भ अर्थ दरेक जगहपर सप्रमाण मंत्रशास्त्रका रहस्य के साथ बड़ी युक्तिसे स्पष्ट किया है.	२	८	०	६

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.

वेदस्तुतिः ।

लोकेव्यवायेतिश्लोकः, जन्माद्यस्येतिश्लोकश्च, काशीनाथोपाध्यायकृतव्याख्योपबृंहितश्रीधरीव्याख्या ।

वेदस्तुतिभाग अद्वैतवेदांतका मुख्य प्रकरण है. वैसाही **लोके व्यवाया०**, तथा **जन्माद्यस्य यतः०** इन दो श्लोकोंपर जो श्रीधरस्वामीने व्याख्या लिखी है सो केवल मीमांसापूर्ण होनेसे दुर्बोध हुई है. उसका तात्पर्यज्ञान लोगोंको सुलभ होनेके लिये प्रसिद्ध धर्मसिंधुकार काशीनाथोपाध्यायने निर्दिष्ट तीनों विषयोंपर सर्वोत्कृष्ट व्याख्या बनाई हुई इसके साथ छपी है. —

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
वेदांतसार—(आवृत्ति पांचवी), नृसिंहसरस्वतीस्वामिकृत सुबोधिनी तथा रामतीर्थविरचित विद्वन्मनोरंजनी व्याख्यानसहित । इस ग्रंथको जे. इ. जेकब साहबने पाठांतर तथा बहुतसे अंग्रेजी नोट्स जोड़कर शुद्ध किया है.	२	०	०	४
शिवगीता—(साधी)	०	१२	०	२
शिवगीता—(कपडेकी जिल्द)	१	४	०	८
शिवगीता—लक्ष्मीनरहरिसूनुकृत बालानंदिनी व्याख्यासहित. इसके १६ अध्याय हैं.	१	४	०	२
सांख्यतत्त्वकौमुदी—सारबोधिनीटीकासहित, यह ग्रंथ विस्तृत टीकाके और टिप्पणीके साथ संग्रह कर सांख्यसिद्धांत पढनेवालोंको अत्यंत सुगम ऐसाही बनवाया है.	५	०	०	८

धर्मशास्त्रग्रन्थ ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
आशौचनिर्णय—त्र्यंबककृत.	०	४	०	१
दीक्षाप्रकाशिका—श्रीविष्णुभट्टकृत अष्टांगसिद्धिपंचांग और कुलाकुलादि चक्रादिकोंसे युक्त.	१	०	०	२

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
धर्मसिंधु—(मूलमात्र) काशीनाथोपाध्यायविरचित.		—		
निर्णयसिंधु—कमलाकरभट्टकृत (मूलग्रंथ).	७	०	१	४
पुरुषार्थचिन्तामणि—श्रीमद्रामकृष्णभट्टसूनु-विष्णुभट्टकृत. यह धर्मशास्त्रका संस्कृत ग्रन्थ बडेही महत्त्वका है. किसी भी प्रकारका निर्णय करते समय **हेमाद्रि, कालमाधव** इत्यादि प्राचीन ग्रन्थोंके वचनोंका जो आपसमें विरोध देखा जाता है, उसका न्याय्यरीतिसे इसमें परिहार करके सब प्रकारका शास्त्रार्थ स्पष्ट लिखा है.	४	०	०	८
मनुस्मृति—कुल्लूकभट्टकृत मन्वर्थमुक्तावली टीका, टिप्पणी, अन्यत्र उपलब्ध मनुवचनोंका संग्रह, पाठभेद इत्यादि विषययुक्त. इसमें श्लोकोंका वर्णानुक्रमकोश भी लगा दिया है.	५	०		-
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरा नामकी व्याख्या-सहित. और प्राच्य अनेक टीकाओंके विशिष्टांश समेत श्लोक-श्लोकार्ध वर्णानुक्रमकोशसहित.	८	०	०	८
स्मृतिकौस्तुभ—(श्रीमदनंतदेवभट्टकृत) इसमें संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष और विशिष्ट दिनादिकोंका निर्णय बडी मार्मिकतासे किया है. और इसमें कितनेक व्रतोंकी पूजा और कथा-ओंकाभी संग्रह है.	५	०	०	८
सनातनमानवधर्म—(मनुस्मृतिसार).		—		

न्यायशास्त्रग्रन्थ।

कारिकावली—सिद्धान्तमुक्तावलीसहित.	१	४	०	४
कारिकावली—देवीसहायमिश्रकृत मुक्तावली-कण्ठाभरणव्याख्यासहित.	०	१२	०	३

की. रु. आ. डा. रु. आ.

गादाधरीपञ्चलक्षणी ।

चिन्तामणि-दीधिति-गादाधरी-कृष्णंभट्टीय-न्यायरत्नेति न्यायपञ्चग्रन्थीसंग्रहः सिंहव्याघ्रलक्षण-सार्वभौमपरिष्कारोपेतः ।

यह न्यायशास्त्रका सर्वोपयुक्त प्रकरणग्रन्थ यद्यपि अन्यत्र मुद्रित हुवा है तथापि हमने पंडितद्वारा प्राचीन पुस्तकोंसे शुद्ध करवाकर पाठान्तरादिसे अलंकृतकर विद्यार्थियोंको अत्यंत सुबोध ऐसा प्रसिद्ध किया है. —

तर्कसंग्रह—दीपिका, न्यायबोधिनी टीका और टिप्पणके साथ. .... —

तर्कसंग्रहचंद्रिका—(तर्कसंग्रहसहिता.) यह व्याख्या अत्यन्त उत्कृष्ट है । उसपर टिप्पण-रूपसे परिष्कारभी बहुत उत्तम किये हैं. ... ० ८ ० २

न्यायलीलावती—यह मैथिलदेशीय प्राचीन नैयायिक श्रीवल्लभाचार्यजीने शालिवाहनके दशवें शतकमें बनाया हुआ वैशेषिकदर्शनका अपूर्व ग्रन्थ है.... १ ४ ० ४

प्रमाणमंजरी—श्रीसर्वदेवसूरिविरचित. यह अप्रसिद्ध प्राचीन न्यायग्रंथ लगभग पंदरहवें शतकमें बनाया हुवा है. इसमें (पदार्थ, द्रव्य, गुण, कर्म, विशेष, समवाय, अभाव इन ७ विभागोंमें) तर्कशास्त्रका मूलतत्त्व बतलाया है, इस ग्रंथका विमर्श "चित्सुखी" सरीखे महान् ग्रंथोंमेंभी किया है. ० ४ ० १

प्रमेयकमलमार्तण्ड—श्रीप्रभाचन्द्राचार्यविरचित. ८ ० १ ०

भास्करोदया—श्रीनीलकंठभट्टकृत तर्कसंग्रहदीपिकाप्रकाश(नीलकंठी)की व्याख्या । बड़े परिश्रमसे संपादन कर छपाई गई है. २ ० ० ४

	की. रु. आ.	डा. रु. आ.
भाषापरिच्छेद—(मैथिल-मुकुंदझा-प्रणीत.) कारिकावली और अर्थदीपिकासहित. इसमें पदान्वय योजना ऐसी है कि प्रसिद्ध मुक्तावलीभी इसकी सहायतासे सुबोध हो जाय.	१ ०	० ३

सिद्धान्तमुक्तावली

दिनकरी–रामरुद्रीव्याख्याभ्यां सहिता ।

यह ग्रन्थ न्यायशास्त्रका सुप्रसिद्ध है. न्यायप्रवेशकी इच्छावालेको इसका अध्ययन अवश्य है. ग्रन्थ गम्भीरार्थ होनेसे पाठप्रवचनको उपरोक्त दिनकरी और रामरुद्रीव्याख्याकी अत्यन्त जरूर है. .... —

मीमांसाग्रन्थ ।

अर्थसंग्रहः

श्रीलौगाक्षिभास्करप्रणीतः । श्रीमत्परमहंसरामेश्वरशिवयोगिभिक्षुप्रणीतमीमांसार्थसंग्रहकौमुदीव्याख्यायुतः ।

जैमिनीयतन्त्र(पूर्वमीमांसा)में प्रवेश होनेके लिये जितने मीमांसाके छोटे छोटे प्रकरणग्रन्थ हैं उनमें लौगाक्षिभास्करका यह अर्थसंग्रहही उत्तम है. मूल्य १॥ रू., डा. ४ आना.

भाट्टदीपिका—(सटीक) महामहोपाध्यायसर्वतन्त्रस्वतन्त्रखण्डदेवप्रणीता, श्रीशम्भुभट्टप्रणीतप्रभावलीव्याख्या (निवीतान्तो भागः १) भाट्टसांप्रदायमें मीमांसाशास्त्रके जितने ग्रंथ हैं, उन सबही सिद्धांतोंका ऊहापोह खंडदेवजीने इस भाट्टदीपिकामेंही सुव्यवस्थित रीतिसे किया है. और उसपर शंभुभट्टकी प्रभावलीव्याख्याभी मूलग्रंथका तात्पर्य आदर्शके माफिक व्यक्त करती है. इस भागमें ग्राहकोंकी सुविधाके लिये किंचित् न्यून तीन अध्यायोंका एक भाग प्रसिद्ध किया है.	८ ०	० १२

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
मीमांसापरिभाषा—(श्रीमत्कृष्णयज्वप्रणीता) इस ग्रंथकी यह तीसरी आवृत्ति प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंके आधारसे सर्वोत्कृष्ट बना दी है.	०	४	०	१
मीमांसाशास्त्रसार.	१	४	०	४
मीमांसान्यायप्रकाश—(आपदेवी) यह पूर्वमीमांसाका छोटासा प्रकरणग्रन्थ पूर्वमीमांसाके पठनपाठनके लिये अत्यंत उपयोगी है. इसकी टिप्पणीमें पाठांतर और विशेष अर्थनिर्णायक योजना भी कर दी है.	०	१२	०	२
शास्त्रदीपिका—प्रथमतर्कपाद.	३	८	०	१२

व्याकरणग्रन्थ ।

अष्टाध्यायीसूत्रपाठ—पाणिनिकृत.....	०	१०	०	२
धातुरूपावलि.	०	८	०	१
प्राकृतमंजरी—कात्यायनमुनिप्रणीत प्राकृतसूत्रवृत्ति. (बालभाषाका व्याकरण.)	०	८	०	१

पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम् ।

भाग १ (नवाह्निक)

कैयटविरचित प्रदीप, नागोजीभट्टकृत उद्द्योत, तथा पायगुण्डेकृत छायासहित. (तृतीयावृत्ति)	१५	०	१	४

पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम् ।

भाग २ (विधिशेषरूपं द्वितीयखण्डम्)

प्रथमाध्याय द्वितीयपादादि द्वितीयाध्यायांततक।	९	०	०	१२

पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम् ।

भाग ३ (विधिप्रकरणरूपं)

कैयटकृत **प्रदीप** और **उद्द्योत** इन २ टीकाओं सहित	५	०	०	८

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम् ।				
भाग ४ (चतुर्थ-पञ्चमाध्यायात्मकम्)	९	०	०	१२
पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम् ।				
भाग ५ (स्थानेविधिरूपं पञ्चमं खण्डम्)	१०	०	०	१२
मध्यसिद्धान्तकौमुदी—श्रीवरदराजकृत, टिप्पण और सूत्रोंके वर्णक्रमकोशसे सहित	३	०	०	१०
रामचंद्रिका-(गुंजीकरकृतसंस्कृतशब्दरूपावलि)	०	८	०	१
लघुधातुरूपसंग्रह—(टिप्पणीसहित) पंडित-श्रीदेवानंदझाप्रणीत. इसमें लघुसिद्धान्तके सब धातुओंकी रूपसिद्धि ऐसी अच्छी लिखी है कि जिसके पढनेवाले बालकोंको पढ़नेमें बड़ी सुगमता होती है.	०	६	०	२
लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराजकृत, टिप्पणीसहित	१	४	०	२
शब्दरूपावलि.	०	३	०	१
समासचक्र—पाणिनीय शिक्षासहित.	०	५	०	१
सारस्वतपूर्वपक्षावली—इसमें पाणिनीय व्याकरणके समानही पूर्वपक्ष-शङ्का और उत्तरपक्ष-समाधानके विषय विस्तारपूर्वक दिये हैं.	०	४	०	१
सारस्वतव्याकरण—तीनों वृत्ति-कागजकी जिल्द	२	१२	०	८
सारस्वतव्याकरण मूल—(पूर्वार्ध) कपड़ेकी जिल्द	१	०	०	३
सारस्वतव्याकरण मूल—(पूर्वार्ध) कागजवाली ,,	०	१२	०	२
सारस्वत चन्द्रकीर्तिटीकासह (पूर्वार्ध)	३	८	०	४
सारस्वतव्याकरण चन्द्रकीर्तिटीकासहित संपूर्ण (तीनों वृत्तियोंके साथ.)	—			

	कीं. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजिदीक्षितकृत, अष्टाध्यायी-सूत्रपाठ, गणपाठ, धातुपाठ, लिंगानुशासन, शिक्षा और सूत्रानुक्रमणीसहित.	५	०	०	१२
सिद्धान्तकौमुदी—तत्त्वबोधिनीनामक टीका. (सूत्रपाठ अष्टाध्यायी सूत्रक्रमांकविभाग)सहित यह **तत्त्वबोधिनी** उत्तरकृदन्ततक परमहंस-परिव्राजकाचार्य श्रीमत् ज्ञानेंद्रसरस्वतीकृत है, और आगे उत्तरकृदंत, स्वर, वैदिक प्रभृति प्रकरणोंपर **श्रीमज्जयकृष्णरचित सुबोधिनी** है. और लिंगानुशासनपर **भैरवी टीका** है. अंतमें कौमुदीके सब परिशिष्ट तथा पांच सूचियाँ जोड दी हैं.	—			

निरुक्तग्रन्थ।

निरुक्तम् [निघंटुभाष्यरूपम्।]

दुर्गाचार्यव्याख्यानुसारिनव्यवृत्तियुतम्.

यह ग्रंथ यास्कमुनिकृत वैदिक षडंगोंमेंका है, जिसमें वैदिक शब्दोंका और वेदमंत्रोंका विवरण अच्छी तरहसे किया है. किंतु वेदका उत्तम अर्थज्ञान होने लिये इस ग्रंथके बिना दूसरा ग्रंथ नहीं है. हालमें इसका उपयोग हर कॉलेजमें हो रहा है. यह ग्रंथ मूलमात्र तथा अन्य व्याख्यायुक्त यद्यपि अनेक जगह छपा है तथापि सुगम होनेके लिये हमने पंडितद्वारा सुबोध व्याख्या तयार करके छपी है. मूल्य १० रु. डाक. म. १ रु.

निरुक्तलघुविवृति—सप्तपादिका. यह यास्कनिरुक्तग्रन्थके पहले सातही पादोंका सर्वोत्कृष्ट विवरण है.	१	४	०	४

कोशग्रन्थ।

अमरकोश—अमरसिंहकृत, भानुजीदीक्षितकृत व्याख्यासुधा अथवा रामाश्रमी टीकासहित.	१०	०	१	०
अमरकोश मूल—शब्दकोशसहित.	१	०	०	४

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
अमरकोश सटीक—शब्दकोशसहित.	३	०	०	८
शब्दभेदप्रकाशः—(शब्दद्वैधकोशः) एकाक्षर-कोशसे युक्त. दोनों कोश उपयुक्त हैं. ...	०	४	०	१

काव्यग्रन्थ ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
अमरुशतक—अमरुककविविरचित, अर्जुनवर्म-देवप्रणीत रसिकसंजीविनीव्याख्यासहित.....	—			
आर्यासप्तशती—गोवर्धनाचार्यविरचित, अनंत-पंडितकृत व्यङ्ग्यार्थदीपना टीकासहित. इसमें ७०० पद्य आर्यावृत्तमें सर्वोत्कृष्ट बनाये गये हैं. नायकनायिकाओंकी उक्ति–प्रत्युक्तिसे श्रृंगाररसका आविर्भाव मनोहर किया है.	२	०	०	४
ऋतुसंहारकाव्य—कालिदासकृत, मणिरामकृत टीकासहित और श्रृङ्गारतिलक काव्यसे युक्त.	०	१२	०	३
कथाकौतुक—पण्डितश्रीवरविरचित.	—			
कथासरित्सागर—महाकवि श्रीसोमदेवभट्टविर-चित. इसमें सुलभ बुद्धिवर्धक और मनोरंजक ऐसीं १२४ उत्तम कथायें हैं.	१०	०	०	१२
कादम्बरीकथासारकाव्य—श्रीमदभिनन्दकृत.	१	४	०	६
किरातार्जुनीयकाव्य—भारविकृत, मल्लिनाथकृत घंटापथटीका और परिशिष्ट सहित.	—			
गङ्गावतरण—श्रीनीलकण्ठदीक्षितविरचित.	०	१२	०	२
जयन्तविजय—श्रीमदभयदेवविरचित.	१	८	०	३

की. रु. आ. डा. रु. आ.

कुमारसंभव—कालिदासकृत, मल्लिनाथकृत संजीविनी (१ से ७ सर्ग तक) और सीतारामकृत (८ से १७ सर्ग तक) संजीविनीटीका, महाशिवपुराण और कुमारसंभव ग्रंथका तुलनात्मक एवं साम्यदर्शक विविध परिशिष्टादियुक्त —

गाथासप्तशती—सातवाहनविरचित, नये संस्करणमें प्राकृत मूलके साथ **संस्कृत गाथासप्तशती** नामक अन्वक्षर छाया तथा **'व्यङ्ग्यसर्वंकषा' नामकी नई टीका** लगा दी है। संस्कृतसंसारमें इस ग्रन्थकी बडी ख्याति है। ४ ८ ० १२

गीतगोविन्द—महाकवि-श्रीजयदेवविरचित, कुम्भनृपतिप्रणीत रसिकप्रियाव्याख्या और महामहोपाध्याय शंकरविरचित रसमंजरीव्याख्या अन्य टीकाविशिष्टांश एवं रागविषयक परिशिष्ट सहित. ३ ० ० ६

दशावतारचरितकाव्य—क्षेमेन्द्रविरचित. १ ८ ० ३

देलरामाकथासार—राजानकभट्टाह्लादकविरचित ० १२ ० २

नीतिशतक—भर्तृहरिकृत, कृष्णशास्त्री महाबलकृत टीकाहिसत. १ ० ० २

नेमिनिर्वाणकाव्य—महाकविवाग्भटकृत. १ ४ ० ३

नैषधीयचरित—श्रीहर्षविरचित, नैषधीयप्रकाशाख्य (नारायणी) टीका और प्राचीन छह टीकाओंके पाठभेद और विशेषांश-टिप्पणसे युक्त. १४ ० १ ०

पतञ्जलिचरित—श्रीरामभद्रदीक्षितप्रणीत. ० १४ ० २

पुष्पबाणविलास—श्रीकालिदासकृत, पण्डित-

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
वरश्रीवेङ्कटसार्वभौमविरचित व्याख्यासहित.	०	८	०	१
बृहत्कथामञ्जरी—श्रीक्षेमेन्द्रविरचित.	८	०	०	८
भट्टिकाव्य—भट्टिकविकृत, जयमङ्गलकविप्रणीत जयमङ्गलाटीकासहित.			—	
भामिनीविलास—पंडितराज श्रीजगन्नाथविरचित, अच्युतरायकृत प्रणयप्रकाशाख्यव्याख्यासहित.			—	
भारतमञ्जरीकाव्य—महाकविश्रीक्षेमेन्द्रविरचित.			—	
मेघदूत—कालिदासकृत, मल्लिनाथकृत संजीविनीटीका, टिप्पणी, पाठांतर और परिशिष्टादिकोंसे युक्त.	१	०	०	४
युधिष्ठिरविजय—महाकवि श्रीवासुदेवविरचित.	३	०	०	४
रघुवंशकाव्य—कालिदासकृत, मल्लिनाथकृत संजीविनीटीकासहित (स्थूलाक्षर).	५	०	०	६
रघुवंशकाव्य—वल्लभ, हेमाद्रि, दिनकरमिश्र, एवं अनेक प्राचीनतम टीकाओंके विशिष्टांश विषयवर्णनात्मक परिशिष्ट, श्लोकानुक्रम एवं संपादकीय टिप्पणीके साथ (सूक्ष्माक्षर).	४	८	०	६
रसिकाष्टककाव्य—नारायणभट्ट पर्वणीकरकृत.	०	२	०	१
राघवनैषधीयकाव्य—हरदत्तसूरिकृत, स्वकृतटीकासहित.	१	०	०	४
रावणार्जुनीयकाव्य—काश्मीरिक श्रीभट्टभीमविरचित.	२	०	०	३
रामायणमञ्जरी—क्षेमेन्द्रविरचित.	८	०	०	१२
राक्षसकाव्य—कविराक्षसकृत.	०	२	०	१
विष्णुभक्तिकल्पलताकाव्य—बौद्धकवि पुरुषोत्तमविरचित, महीधरविरचितटीकासहित....	१	०	०	३

	की. रु.	आ.	डा.	रु.	आ.
विदग्धमुखमण्डनकाव्य—धर्मदाससूरिविरचित, सटीक. इसमें काव्यके भेद अपूर्व दिखलाये हैं.	०	१२	०		१
वैराग्यशतक—भर्तृहरिकृत, कृष्णशास्त्री महाबलकृत टीकासहित.	०	८	०		१
शिशुपालवधकाव्य—माघकृत, मल्लिनाथकृत सर्वंकषाटीकासहित.				—	
शृङ्गारतिलक—महाकवि कालिदासकृत.	०	२	०		१
शृङ्गारशतक—भर्तृहरिकृत, कृष्णशास्त्री महाबलकृत टीकासहित.	०	८	०		१
श्रीकण्ठचरितकाव्य—श्रीमङ्खकविकृत, जोनराजकृत टीकासहित. इसमें २५ सर्ग हैं, जिनमें सज्जन-दुर्जन लोगोंका वर्णन, वसंतवर्णन, कैलासपर्वतवर्णन, शिववर्णनआदि परममनोहर विषय सविस्तर वर्णित हैं.	३	८	०		६
समयमातृकाकाव्य—क्षेमेन्द्रविरचित.	०	१४	०		३
सहृदयानन्दकाव्य—कृष्णानन्दविरचित. इसमें १५ सर्ग हैं. विद्यार्थियोंको संस्कृतके व्युत्पत्तिज्ञान प्राप्त करनेमें बड़ा उपयोगी है.	०	१४	०		३
साम्बपञ्चाशिका—साम्बकविप्रणीत, क्षेमराजकृत टीकासहित.....	०	६	०		१
सुभाषितत्रिशती—(भर्तृहरिशतकत्रय) श्रीरामचन्द्रबुधेन्द्रविरचित सहृदयानन्दिन्याख्यव्याख्यासहित.				—	

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
सुरथोत्सव—श्रीसोमेश्वरदेवविरचित.	१	४	०	३
सूक्तिसंग्रह—कविराक्षसकृत.	०	२	०	१
सूर्यशतक—मयूरकविविरचित. त्रिभुवनपालकृत व्याख्यासहित.	—			
सेतुबन्धमहाकाव्य—श्रीप्रवरसेनविरचित,सटीक.	४	८	०	८
हरचरितचिन्तामणिकाव्य—राजानकजयरथकृत.	३	०	०	४
हरिहरसुभाषित—श्रीहरिहरप्रणीत. यह अत्युत्तम सुभाषितग्रंथ है.	०	१२	०	२

गद्य-ग्रन्थ ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
ईसब्नीतिकथा—प्रथम भाग—(कथा १—६०)	१	०	०	४
ईसब्नीतिकथा—द्वितीय भाग (कथा ६१-१२०)	०	१०	०	२
कादम्बरी—बाणभट्टकृत, भानुचंद्र तथा सिद्धचंद्रकृत टीकाद्वयसहित.....	१६	०	०	१४
तिलकमञ्जरी—श्रीधनपालविरचित.....	३	८	०	८
दशकुमारचरित—दण्डिकृत, पूर्वपीठिका, उत्तरपीठिका, कवीन्द्रसरस्वतीकृत पदचन्द्रिकाटीका, शिवरामकृत भूषणा टीका, (पूर्वपीठिकापर) लघुदीपिका और पददीपिका टीकासहित.	३	०	०	८
पञ्चतन्त्र—श्रीविष्णुशर्मकृत, . नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ' कृत सरला नामक अत्यंत सुबोधटीका और विषय-श्लोकानुक्रमसे युक्त; परीक्षोपयोगी अनोखा संस्करण.	४	०	०	१०
भोजप्रबन्ध—श्रीवल्लालविरचित.	०	१२	०	१
सुभाषितरत्नसंदोह—श्रीमदमितगतिविरचित.	१	८	०	४

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
हर्षचरित-बाणभट्टकृत, शंकरकृत संकेतटीकासहित	३	०	०	२
हितोपदेश—नारायणपण्डितकृत.	१	८	०	८

छन्दोग्रन्थ।

छंदःशास्त्र—पिङ्गलाचार्यकृत, हलायुधकृत मृतसञ्जीवनी टीकासहित है। छन्दोंके विषयमें यही सर्वमान्य ग्रन्थ है.	३	०	०	४
वाणीभूषण—श्रीदामोदरमिश्रविरचित.	०	१२	०	१
वृत्तरत्नाकर—पंचिकाव्याख्यासहित....	२	०	०	६

नाटकग्रन्थ।

अभिज्ञानशाकुन्तल—कालिदासकृत, राघवभट्टकी टीका, अनेक परिशिष्ट और प्राचीन पाठान्तरोंसे अलंकृत. इस नया संस्करणमें अनेक प्राच्य आदर्शोंके सहायसे अनुपलब्ध पाठ एवं अनेक श्लोकभी दाखिल किये हैं.	३	८	०	१२
अद्भुतदर्पणनाटक—महादेवविरचित.	१	०	०	२
अमृतोदयनाटक—गोकुलनाथकृत.	०	१२	०	२
उन्मत्तराघवप्रेक्षाणक—भास्करकविविरचित.	०	८	०	१
उत्तररामचरित—भवभूतिकविरचित और वीरराघवप्रणीत टीकासे युक्त है. नया आवृत्तिमें पाठान्तर और भवभूतिके ही रचे हुये दूसरे ग्रन्थोंमें आये हुये समान श्लोकोंका परिशिष्टभी जुडा दिया है.	२	८	०	४
कर्पूरमञ्जरीसट्टक—राजशेखरकृत, वासुदेवकृत टीकासहित, और बालभारतनाटकसहित.	२	८	०	४
कंसवधनाटक—शेषकृष्णकृत.	०	१२	०	२

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
जीवानंद—इस छह अङ्कात्मक नाटकमें संसारसे जीव कैसे मुक्ति पाते हैं यह वर्णन किया है.	१	४	०	४
दूताङ्गदछायानाटक—श्रीसुभटकविविरचित.	०	६	०	१
धनंजयविजय—श्रीकाञ्चनाचार्यविरचित.	०	६	०	१
पार्वतीपरिणयनाटक—महाकविबाणकृत.	०	८	०	१
प्रसन्नराघवनाटक—श्रीजयदेवकविविरचित.	१	४	०	२
प्रबोधचन्द्रोदय—श्रीमत्कृष्णमिश्रयतिविरचित, नाण्डिल्लगोपप्रभुविरचित चन्द्रिकाटीका, और रामदासकृत प्रकाशटीकासहित.	२	०	०	४
भर्तृहरिनिर्वेदनाटक—हरिहरोपाध्यायकृत.	०	५	०	१
महावीरचरितनाटक—भवभूतिकृत, वीरराघवकृत टीकासहित.	२	८	०	६
मालतीमाधवनाटक—भवभूतिकृत, त्रिपुरारिकृत टीका, नान्यदेवकृत टीका, और जगद्धरकृत टीकासहित.....	३	८	०	६
मालविकाग्निमित्रनाटक—कालिदासकृत, काटयवेमकृत–कुमारगिरिराजीयव्याख्यासहित.	१	४	०	४
मृच्छकटिक–श्रीशूद्रककविविरचित, पृथ्वीधरकृत व्याख्यासहित.	३	४	०	८
रत्नावली नाटिका–श्रीहर्षवर्धनविरचित, रत्नावलीप्रभाख्यव्याख्यासहित. यह नाटक सुप्रसिद्ध है.	२	०	०	४
क्मिणीपरिणय-श्रीरामवर्मवञ्चियुवराजविरचित.	०	१२	०	२
लटकमेलकप्रहसन—शंखधरविरचित.	—			
विद्यापरिणय—आनन्दरायमखिविरचित.	०	१२	०	२

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
विदग्धमाधव—श्रीरूपगोस्वामिप्रणीत (सटीक.)	२	०	०	२
विक्रमोर्वशीय—रंगनाथ प्रकाशिका व्याख्या	१	१२	०	२
विक्रमोर्वशीयनाटक—कालिदासकृत, पं. सुरेन्द्रनाथशास्त्रीकृत कल्पलताव्याख्यासहित.	३	०	०	८
वेणीसंहारनाटक—भट्टनारायणप्रणीत, जगद्धरकृत टिप्पणीसहित.	१	८	०	४
वृषभानुजानाटिका—श्रीमथुरादासविरचित.	०	१२	०	१
सत्यहरिश्चन्द्रनाटक—महाकविरामचन्द्रप्रणीत.				—
सुभद्राहरणनाटक—माधवभट्टप्रणीत.	०	८	०	१
सौगन्धिकाहरण—श्रीमद्विश्वनाथकृत टिप्पणीसहित.	०	८	०	१
स्वप्नवासवदत्तानाटक—(महाकविभासप्रणीत) यह ग्रंथ सुगम और विस्तृत, आधुनिक सरणीसे एवं संस्कृत टीकासे सुशोभित है. यह नाटक कलकत्ता, बनारस युनिव्हर्सिटीकी परीक्षा देनेवाले विद्यार्थियोंके लिए अत्यंत उपयुक्त है.	२	८	०	४

नाट्यशास्त्रग्रन्थ ।

मन्दारमरन्दचम्पू—कृष्णकविविरचित, माधुर्यरञ्जनीनामक टीकासहित.	२	०	०	४
नाट्यशास्त्र—श्रीभरतमुनिविरचित.	१०	०	०	१२

चम्पूग्रन्थ ।

चम्पूरामायण—श्रीभोजराजविरचित. (पञ्चमकाण्डतक) लक्ष्मणसूरिविरचित (षष्ठकाण्डमात्र) और रामचन्द्रबुधेन्द्रविरचित व्याख्यासहित.				—

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
चम्पूभारत—रामचन्द्रबुधेन्द्रव्याख्या, विषयानुक्रम और सुगम टिप्पणसे युक्त.....	७	०	०	१२
निम्बादित्यदशश्लोकी—श्रीहरिव्यासदेवकृत कुसुमाञ्जलिभाष्यसंवलिता.	०	८	०	१
पारिजातहरणचम्पू—शेषकृष्णविरचित.	०	१२	०	२
भारतीयसिद्धांतादेश.	०	६	०	१
यशस्तिलक—श्रीसोमदेवसूरिविरचित, श्रीश्रुतसागरसूरिकृत व्याख्यासहित (पूर्वखण्ड.)	६	८	०	१२
यात्राप्रबन्ध—समरपुंगवदीक्षितविरचित.	२	०	०	४
श्रीनिवासविलासचम्पू—वेङ्कटेशकविप्रणीत, धरणीधरकृत टीकासहित.	१	४	०	४

भाणग्रन्थ ।

मुकुन्दानन्दभाण—श्रीकाशीपतिविरचित.	०	१२	०	२
शृङ्गारतिलकभाण—श्रीरामभद्रदीक्षितविरचित.	०	८	०	१
शृङ्गारभूषणभाण—वामनभट्टबाणविरचित.....	०	६	०	१
शृङ्गारसर्वस्वभाण—श्रीवल्लालकविविरचित.....	०	१०	०	२
रससदनभाण—युवराजकविविरचित.	१	०	०	२

अलंकारग्रन्थ ।

अभिधावृत्तिमातृका—महोपाध्याय श्रीमन्मुकुलभट्टप्रणीत, तथा शब्दव्यापारविचारश्रीमन्मम्मटाचार्यविरचित.	—			
अलंकारशेखर—श्रीकेशवमिश्रकृत.	१	०	०	३

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
अलंकारसर्वस्व—राजानकरुय्यकविरचित और जयरथकृत टीकाके साथ है. इसमें शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कारोंका अच्छी तरहसे विवेचन किया है.	२	०	०	४
अलंकारकौस्तुभ—श्रीविश्वेश्वरपण्डितविरचित, स्वोपज्ञव्याख्यासहित.	—			
उज्ज्वलनीलमणि—श्रीमद्रूपगोस्वामिप्रणीत, श्रीमद्विश्वनाथविरचित आनन्दचन्द्रिकाव्याख्या तथा श्रीजीवगोस्वामिविरचित लोचनरोचनाव्याख्यासहित. यह अलंकार ग्रंथ सरसरसिकोंका मनोविनोदके लिये सिर्फ एकही है. (**दूसरा संस्करण**).	४	०	१	०
कर्णभूषण—श्रीगङ्गानन्दकविराजप्रणीत.	१	०	०	३
काव्यप्रदीप—महामहोपाध्यायश्रीगोविन्दविरचित, तत्सदुपाख्यवैद्यनाथकृतव्याख्यासहित.	३	०	०	६
काव्यानुशासन—श्रीमद्वाग्भटविरचित, स्वकृत टीकासहित.	१	०	०	२
काव्यानुशासन—आचार्यहेमचन्द्रविरचित, स्वोपज्ञालंकारचूडामणिसंज्ञकवृत्तिसहित.	३	८	०	८
कुवलयानंद—श्रीमप्पय्यदीक्षितप्रणीत, चन्द्रालोक, अलंकारचन्द्रिकाव्याख्या, मतान्तरनिदर्शक टिप्पणीयोंसे सहित.	३	०	०	८
दशरूपक—श्रीधनंजयविरचित, धनिककृत अवलोकटीका और भरतकृत **दशरूप**से सहित.	१	४	०	२
ध्वन्यालोक—आनंदवर्धनाचार्यरचित, सटीक.	—			
वाग्भटालंकार—श्रीवाग्भटप्रणीत, सटीक....	—			

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
रसगङ्गाधर—महाकवि श्रीजगन्नाथ पण्डितराजविरचित महामहोपाध्याय नागेशभट्टकृत टीका और पं. मथुरानाथ शास्त्री साहित्याचार्य, इनकी बनाई हुई सरला टीकासे सहित.	—			
वृत्तिवार्तिक—श्रीमदप्पय्यदीक्षितप्रणीत.	०	६	०	१
सरस्वतीकण्ठाभरण—श्रीभोजदेवविरचित. १–३ परिच्छेदतक रामसिंहविरचितटीका और ४ परिच्छेदको जगद्धररचित टीका, ऐसे दो टीकासे युक्त है.	७	०	१	०
साहित्यसार—अच्युतरायकृत, स्वोपज्ञसरसामोदव्याख्यासहित.	४	८	०	८

वैद्यकग्रन्थ ।

अष्टाङ्गहृदय मूल—वाग्भटकृत. यह **षष्ठावृत्ति** पाठ-पाठांतरोंसे और टिप्पणोंसे युक्त है, और प्राचीन अमुद्रित पुस्तकोंके सहायसे विशेषतः शुद्ध किया है, अंतमें **वैद्यक-पारिभाषिकशब्दकोष**भी जुडाया है जिससे वाचकको मूलका अर्थ समझनेमें सुगमता होगी.	३	८	०	४
अष्टाङ्गहृदय—अरुणदत्तकृत **सर्वाङ्गसुन्दरा**, हेमाद्रिकृत **आयुर्वेदरसायन** इन दोनों टीकाओंके साथ और पाठान्तरोंसे विद्वत्ताप्रचुर प्रस्तावनासे युक्त पहिलेही वख्त छपा है.	२५	०	१	०
चरकसंहिता—अग्निवेशकृत, मूलमात्र.	६	०	०	८

चरकसंहिता (सटीका).

अग्निवेशमहर्षिकृता, चरकप्रतिसंस्कृता, चक्रपाणिदत्तप्रणीतया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया समलंकृता ।

यह ग्रंथ सुप्रसिद्ध है. इसका इस द्वितीय संस्करणमें बडे प्रयत्नसे प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथोंसे शुद्ध करके टिप्पणी जोडकर नवीन परिष्कार किया गया है.

मू० १८ रु., डा. म. १ रु.

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
द्रव्यगुणसंग्रह—शिवदासकृत व्याख्यासहित, वैद्यमहामहोपाध्याय श्रीचक्रपाणिदत्तप्रणीत औषधियोंका विवेचन किया है.	—			
शार्ङ्गधरसंहिता (मूल)—पाठभेद और अञ्जननिदानसहित.	२	०	०	३

शार्ङ्गधरसंहिता (सटीक).

श्रीमत्पण्डितदामोदरसूनु-शार्ङ्गधराचार्यविरचिता, आढमल्लविरचितदीपिकाव्याख्यया, पण्डितकाशिरामवैद्यविरचितगूढार्थदीपिकाव्याख्यया च संवलिता।

यह ग्रंथ आयुर्वेद ग्रंथोंमें सुप्रसिद्ध है. इसका आजतक दो–तीनवार केवल मूलही छपा था, अभी बडे प्रयत्नसे उपरोक्त व्याख्याद्वय संपादन करके मूलसे अंततक यथायोग्य जुडा कर छपाया है. **मू. ८ रु., डा. ८ आने.**

सुश्रुतसंहिता मूल—प्राचीन और अर्वाचीन दृष्ट्या शस्त्रोंका सचित्र परिचय करनेवाला परिशिष्ट, पाठान्तर इत्यादि विषययुक्त.	८	०	०	८

ज्योतिषग्रन्थ।

आर्यासप्तति—भट्टोत्पलाचार्यकृत, मुकुन्दरामकृत–आशुबोधिनीटीकासहित.	०	८	०	१
जैमिनिपद्यामृत—मूलकन्दलीवृत्ति, कारिकासहित.	१	८	०	२
ताजकनीलकण्ठी—तीनों तंत्रोंसहित (सटीक)	२	०	०	६
मुहूर्तचिन्तामणि—पीयूषधाराव्याख्यासहित.	५	०	०	१२
मुहूर्तकल्पद्रुम—विठ्ठलदीक्षितकृत शुभाशुभ मुहूर्तका निर्णयके लिये ज्योतिषीयोंको संग्राह्य है.	०	१२	०	४

	कीं. रु.	आ.	डा. रु.	आ.

यन्त्रराज और यन्त्रशिरोमणि
महेन्द्रविरचित (सटीक)।

यह खगोलविज्ञान शास्त्रका उत्तम ग्रंथ है, जिसमें खगोलके यंत्र और उनका लक्षणोंसहित ग्रहोंका विवेचन अच्छी तरहसे किया है. यह सूर्यसिद्धांत, सिद्धांत-शिरोमणि इत्यादि पढनेवालोंको अत्युपयोगी है. **कीमत २ रु. डा. ६ आ.**

	कीं. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
सारावली—यह सर्वोत्तम ज्योतिषशास्त्रके फलादेशका प्राचीन ग्रन्थ है.....	२	८	०	६
विवाहपटल—विवाहविधिका सारसमुच्चय है.	०	८	०	१

स्तोत्रग्रन्थ।

अम्बाष्टक.	०	१	०	॥
आदित्यहृदय और सूर्यकवच.	०	६	०	१
ऋणमोचन–मङ्गलस्तोत्र.	०	१	०	॥
कर्पूरस्तवराजस्तोत्र	०	६	०	१
कुञ्जिकास्तोत्र.	०	३	०	१
गणपतिस्तोत्र.	०	३	०	॥
गणेशगीता—(साधी)	०	८	०	१

– नवग्रहस्तोत्रसंग्रहः –

(दूसरा संस्करण) अठारह पुराण और उपपुराणोंसे खोज कर नवग्रहोंका कवच और स्तोत्रोंका संग्रह प्रसिद्ध किया है. इसका पाठ करनेसे अनिष्ट ग्रहकी पीडा मिट जाती है. इष्ट-अनिष्ट हरएक ग्रहका फल, वेदोक्त व शास्त्रोक्त मंत्र–परिहार और प्रतिस्थानमें ग्रहकी कालमर्यादा, छोटी बडी पनोतीका स्पष्ट विवरण इत्यादि उपयुक्त विवेचन सुगम हिंदी भाषामें किया है.	०	१०	०	२
गणेशकवच.	०	२	०	॥

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
गणेशसहस्रनाम—भास्कररायविरचित भाष्ययुक्त.	१	४	०	४
गणेशाष्टक.....	०	१	०	॥
गणेशसहस्रनाम.	०	४	०	१
गङ्गालहरी (मूल.)	०	२	०	॥
गङ्गालहरी—जगन्नाथपण्डितराजविरचित, पीयूषलहरीव्याख्यासहित.	०	८	०	१
गोपालसहस्रनाम मूल. .... कागदी	०	७	०	१
ज्योतिर्लिङ्गस्तोत्र और शिवमानसपूजा.	०	२	०	॥
त्रैलोक्यमोहनकवचम्—यह अपूर्व स्तोत्र बड़ा लाभकारी है. यह आरंभसे अंततक मंत्ररूप है.		—		
दत्तात्रेयस्तोत्र—दत्तापराधसमापनस्तोत्र.	०	३	०	॥
द्वादशस्तोत्र—भगवत्पादाचार्यकृत.	०	३	०	॥
नर्मदाष्टकस्तोत्र—शंकराचार्यकृत.	०	१	०	॥
पुरुषोत्तमसहस्रनाम—श्रीपुरुषोत्तमनामसहयमुनाष्टकासहित.	०	५	०	१
ब्रह्मज्ञानावली—शंकराचार्यकृत.	०	१	०	१
बृहत्स्तोत्ररत्नाकर–सचित्र गुटका–(प्रथम भाग) यह नावीन्यपूर्ण २११ स्तोत्रोंका संग्रह है इसमें गणेश, विष्णु, शिव, गायत्री, सूर्य, कार्तिकेय, देवी (अपूर्ण) इनकीं मंत्रगर्भ स्तोत्रें १८ पुराण और उपपुराणोंसे चुन कर संग्रह किया है. दूसरा भागभी तैय्यार हो रहा है.	३	०	०	८
बृहत्स्तोत्ररत्नाकर—कपडेकी जिल्द	३	१२	०	८
मकरन्दस्तवराज.	०	२	०	१
महालक्ष्म्यष्टक.	०	१	०	॥
महिम्नस्तोत्र—मधुसूदनी (शिवविष्णवर्थक) व्याख्यासहित.	०	१०	०	२
महिम्नस्तोत्र—सुबोधिनीटीकासहित.		—		

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
यमुनाष्टक—शंकराचार्यकृत. (स्थूलाक्षर).....	०	१	०	॥
रामरक्षास्तोत्र—(बुधकौशिककृत)....	०	१	०	॥
रामस्तवराजस्तोत्र.	०	२	०	॥
रामपट्टाभिषेक—यह स्तोत्र संपत्ति-समृद्धिदायक है.	०	५	०	१
रेणुकासहस्रनाम कवचसहित—यह सहस्रनाम पद्मपुराणस्थमायोपाख्यानान्तर्गत रेणुकास्तवमें श्रीशंकर-षण्मुखका संवादरूप है, इसके अंतमें रेणुकाकवच जोड़ दिया है, वह केवल मंत्रगर्भही है.	०	३	०	१
लक्ष्मीस्तोत्र—अगस्त्यकृत.	०	२	०	१
लक्ष्मीनारायणहृदय—गुटका कपडेकी जिल्द.	०	८	०	१॥
विष्णुसहस्रनाम—(बड़ा अक्षर सादा)	०	७	०	१
विष्णुसहस्रनाम—(सादा)	०	५	०	१
शिवकवच.	०	४	०	१
शिवसहस्रनाम.	०	५	०	१
शिवतांडवस्तोत्र.	०	३	०	१
शिवमहिम्नस्तोत्र—पुष्पदन्तकृत.	०	३	०	१
शिवापराधक्षमापनस्तोत्र.	०	२	०	॥
शीतलाष्टक.	०	१	०	॥
स्तवमाला—श्रीरूपदेवविरचिता, श्रीजीवदेवविरचितभाष्यसहित.	३	०	०	४
लक्ष्मीसहस्रनाम.	०	५	०	१
दत्तात्रेयसहस्रनाम.	०	६	०	१
देवीसहस्रनाम.	०	६	०	१

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
दत्तात्रयकवच.	०	४	०	१
महालक्ष्मीस्तोत्र.	०	५	०	१
भवानीसहस्रनाम, भवानीस्तोत्र, भुवनेश्वरीस्तोत्रम् (तिन्हीं एका पुस्तकांत आहेत).	०	६	०	१

प्रकीर्ण ग्रन्थ।

समयोचितपद्यमालिका—इसमें प्रवचन व्याख्यानादि समयपर उपयुक्त श्लोकोंका संग्रह है.	०	१२	०	२
सुभाषितरत्नभाण्डागार—(सुगम टिप्पणयुक्त) यह ११००० सुभाषितोंका एक अनोखा संग्रह है; नया संस्करणमें १००० सुभाषितोंका एक नया प्रकरण जुडा दिया है और प्रायः हरएक सुभाषित किस ग्रंथसे लिया है उसका स्थाननिर्देश भी साफ साफ कर दिया है. निर्दिष्ट ग्रंथकारोंका स्थल-कालनिर्णय और अन्य परिचयभी दिया है.	१२	०	१	४
चतुःश्लोकी भागवत.	०	१	०	॥
तुलसीमाहात्म्य.	०	२	०	॥
पत्रिकाप्रशस्ति—(बालकृष्णत्रिपाठिप्रणीत) संस्कृतभाषामें बडे २ विद्वान् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, माता, पिता, भाई, गुरु, मित्र आदिकोंको गद्य और पद्यरूपसे पत्र लिखनेके लिये इसमें अच्छे नमूने हैं.	०	६	०	१
प्रश्नोत्तरपयोनिधि—बलरामदासमुनिकृत.	०	६	०	१
रत्नसमुच्चय.	०	६	०	॥

SANSKRIT BOOKS WITH ENGLISH NOTES.

KALIDASA'S RAGHUWANSHA

WITH

MALLINATHA'S COMMENTARY;

AND

EXHAUSTIVE GRAMATICAL & CRITICAL NOTES,

and close *English Translation* together with an *Introduction* giving all available information about the author and a discussion about the literary merits of the Poem

BY

KRISHNARAO M. JOGLEKAR, M. A.

University Gold Medalist and Annotator of "Shâkuntala" "Meghadûta" "Bhartrihari's Shatakas"; "Janakiharaṇa"; "Ratnâvali"; "Buddha Charita".

etc: etc: etc:

		Price. Rs. as.	Postage.
LAUKIKANYAYANJALI (a collection of popular sayings) by Colonel G.A. Jacob.	Part I	0- 12	0-2-0
" " ...	... Part II	1- 4	0-4-0
" " ..	... Part III	2- 0	0-4-0

	Price. Rs, A.	Postage.
MṚICHCHHAKAṬIKA by S'ûdraka, with English Notes by Pandit H. M. S'arma, M. A.	—	
ṚIK-SANGRAHA with Sâyana-bhâshya and English Notes, by V.G. Vijâpurkar, M. A.	3- 0	0 6-0
VEDANTA-SARA of Sadananda, with English Notes(Second Edition)by Colonel G.A. Jacob.	2- 0	0 4-0
MUDRA-RAKSHASA by Vis'akhadatta, with English Notes by K. T. Telang, M. A. LL. B., C. I. E.	—	
SATARA by D. B. Parasnis.	0- 8	0-2-0

USEFUL SCHOOL SERIES

BEAUTIES of English literature	0- 6	0-1-6
GRAMMAR of Sanskrit language—by Dr. F. Kielhorn. Revised fifth edition.	4- 0	0-6-0
PRIMER of MENSURATION for Schools—by Dr. T. Cooke. Fourth Edition. ...	0- 8	0-2-0
SAHITYA-SARA-SANGRAHA (A treatise on Indian Poetics)	1- 0	0-2-0

MANAGER,
Nirnaya-sagar Press,
Kalbadevi Road, BOMBAY

काव्यमाला मासिक पुस्तकमें छपे हुये ग्रंथ.

की.रु.आ.डा.रु.आ.

प्रथम गुच्छक—इसमें (१) राघवचैतन्यविरचित महागणपतिस्तोत्र (सटीक), (२) लङ्केश्वरविरचित शिवस्तुति, (३) कालिदासकृत श्यामलादण्डक (४) कुलशेखरनृपविरचित मुकुन्दमाला, (५) जगन्नाथपण्डितराजविरचित सुधालहरी, (६) शंभुमहाकविविरचित राजेन्द्रकर्णपूर, (७) क्षेमेन्द्रविरचित कलाविलास, (८) जगन्नाथपण्डितराजविरचित प्राणाभरण (सटीक), (९) अप्पय्यदीक्षितविरचित वैराग्यशतक, (१०) जगन्नाथपण्डितराजविरचित अमृतलहरी, (११) रत्नाकरविरचित वक्रोक्तिपञ्चाशिका (सटीक), और (१२) क्षेमेन्द्रविरचित औचित्यविचारचर्चा, इतनीं काव्यें संगृहीत हैं. २ ० ० ३

द्वितीय गुच्छक—इसमें (१) शंकराचार्यकृत विष्णुपादादिकेशांतवर्णनस्तोत्र (सटीक), (२) गुमानिकविप्रणीत उपदेशशतक, (३) क्षेमेन्द्रकृत सुवृत्ततिलक, (४) जगन्नाथपण्डितराजविरचित करुणालहरी, (५) शम्भुमहाकविविरचित अन्योक्तिमुक्तालता, (६) क्षेमेन्द्रकृत सेव्यसेवकोपदेश, (७) विक्रमविरचित नेमिदूत, (८) जगन्नाथपण्डितराजविरचित लक्ष्मीलहरी, (९) रुद्रकविकृत भावविलास, (१०) क्षेमेन्द्रकृत चारुचर्या, (११) मधुसूदनसरस्वतीविरचित आनन्दमन्दाकिनी, (१२) शंकराचार्यकृत अम्बाष्टक (सटीक), और (१३) मुकुन्दमुक्तावली, ये १३ काव्य हैं. २ ० ० ३

तृतीय गुच्छक—इसमें (१) गोकुलनाथविरचित शिवशतक, (२) पञ्चस्तवी, (३) दामोदरगुप्तप्रणीत कुट्टनीमत, (४) रुद्रभट्टकृत शृङ्गारतिलक, और (५) माधवविरचित दानलीलाकाव्य, इन ५ काव्योंका हैं. .... —

कीः रु. आ. डा. रु. आ.

चतुर्थ गुच्छक—इसमें (१) बाणभट्टविरचित चण्डीशतक (सटिप्पण), (२) नागराजप्रणीत भावशतक, (३) नारायणभट्टपादकृत स्वाहासुधाकर, (४) श्रीकृष्णकविप्रणीत ताराशशाङ्क, (५) रामचन्द्रकविकृत रसिकरञ्जन (सटीक), (६) क्षेमेन्द्रकृत कविकण्ठाभरण, (७) भल्लटकृत भल्लटशतक, (८) नीलकण्ठप्रणीत सभारञ्जनशतक, और कालिदासकृत नवरत्नमाला, ९ काव्यें हैं. २ ० ० ३

पञ्चम गुच्छक—इसमें (१) मूककविकृत पञ्चशती, (२) क्षेमेन्द्रकृत चतुर्वर्गसंग्रह, (३) वीरेश्वरकृत अन्योक्तिशतक, (४) शिवरामत्रिपाठीकृत नक्षत्रमाला सटीका (५) नीलकण्ठदीक्षितकृत कलिविडम्बन, ६ सोमप्रभाचार्यकृत शृङ्गारवैराग्यतरङ्गिणी सटीका, ७ नारायणभट्टकृत कोटिविरह, और ८ राजानकरुय्यकप्रणीत सहृदयलीला, इतनीं काव्यें हैं. २ ० ० ४

षष्ठ गुच्छक—इसमें (१) शंकराचार्यकृत शिवपादादिकेशान्तवर्णनस्तोत्र, (२) शंकराचार्यकृत शिवकेशादिपादान्तवर्णनस्तोत्र, (३) नीलकण्ठदीक्षितविरचित शान्तिविलास, (४) लोष्टकविकृत दीनाक्रन्दनस्तोत्र, (५) श्रीकृष्णवल्लभप्रणीत काव्यभूषणशतक, (६) श्रीनिवासाचार्यविरचित जानकीचरणचामर, (७) क्षेमेन्द्रविरचित दर्पदलन, (८) शिवरामत्रिपाठीप्रणीत रसरत्नहार (सटीक), और (९) नीलकण्ठदीक्षितप्रणीत अन्यापदेशशतक, ९ काव्यें हैं. २ ० ० ४

सप्तम गुच्छक—इसमें (१) मानतुङ्गाचार्यविरचित भक्तामरस्तोत्र, (२) सिद्धसेनदिवाकरप्रणीत कल्याणमन्दिरस्तोत्र, (३) वादिराजप्रणीत एकीभावस्तोत्र, (४) धनञ्जयप्रणीत विषापहारस्तोत्र, (५) भूपालकविप्रणीत जिनचतुर्विंशतिका, (६) देवनन्दिप्रणीत सिद्धिप्रियस्तोत्र, (७) सोमप्रभाचार्यविरचित सूक्तिमुक्तावली, (८) जम्बूगुरुविरचित जिनशतक,

कीं.रु.आ. डा.रु.आ.

(९) पद्मानन्दकविप्रणीत वैराग्यशतक, (१०) जिनप्रभसूरिविरचित सिद्धान्तागमस्तव (सावचूरि), (११) आत्मनिन्दाष्टक, (१२) जिनवल्लभसूरिविरचित समसंस्कृतप्राकृतमहावीरस्वामिस्तोत्र, (१३) हेमचन्द्राचार्यविरचित अन्ययोगव्यवच्छेदिकाद्वात्रिंशिकाख्यमहावीरस्वामिस्तोत्र, (१४) हेमचन्द्राचार्यविरचित अयोगव्यवच्छेदिकाद्वात्रिंशिकाख्यमहावीरस्वामिस्तोत्र, (१५) जिनप्रभसूरिविरचित पार्श्वनाथस्तव, (१६) जिनप्रभसूरिविरचित गौतमस्तोत्र, (१७) जिनप्रभाचार्यविरचित श्रीवीरस्तव, (१८) जिनप्रभसूरिविरचितचतुर्विंशतिजिनस्तव, (१९) जिनप्रभसूरिविरचित पार्श्वनाथस्तव, (२०) जिनप्रभसूरिविरचित श्रीवीरनिर्वाणकल्याणस्तव, (२१) विमलप्रणीत प्रश्नोत्तररत्नमाला, (२२) धनपालप्रणीत ऋषभपञ्चाशिका, (२३) शोभनमुनिप्रणीत चतुर्विंशतिजिनस्तुति (सटिप्पणी), ये २३ स्तोत्रें संगृहीत हैं. २ ० ० ३

अष्टम गुच्छक—इसमें (१) कूरनारायणकविविरचित सुदर्शनशतक (सटीक), (२) विश्वेश्वरपण्डितकृत कवीन्द्रकण्ठाभरण (सटीक), (३) प्रबोधसुधाकर, (४) जह्लणकृत मुग्धोपदेश, (५) विश्वेश्वरपण्डितकृत रोमावलिशतक, और (६) वेङ्कटनाथकृत सुभाषितनीति, ६ काव्यें हैं. ... ... —

नवम गुच्छक—इसमें (१) आनंदवर्धनाचार्यकृत देवीशतक (सटीक), (२) अवतारकविप्रणीत ईश्वरशतक (सटीक), (३) मधुसूदनकविप्रणीत अन्योपदेशशतक, (४) लक्ष्मणाचार्यप्रणीत चण्डीकुचपञ्चाशिका, (५) विद्यावागीशकविविरचित कौन्तेयवृत्त, (६) उत्प्रेक्षावल्लभकविविरचित सुन्दरीशतक, (७) श्रीनारायणपण्डिताचार्यविरचित शिवस्तुति, (८) श्रीमच्छंकराचार्यभगवत्पादविरचित त्रिपुरसुन्दरीमानसिकोपचारपूजास्तोत्र, (९) श्रीसुन्दराचार्यकविनिर्मित गीतिशतक, (१०) श्रीसामराजदीक्षितविरचित त्रिपुरसुन्दरीमानसपूजनस्तोत्र, और (११) शंकराचार्यविरचित चतुःषष्ट्युपचारमानसपूजास्तोत्र, ११ काव्यें हैं. ३ ० ० ६

की.रु.आ. डा.रु.आ.

दशम गुच्छक—इसमें (१) दुर्वासविरचित ललितास्तवरत्न, (२) रामभद्रदीक्षितविरचित रामाष्टप्रास, सेतुशास्त्रिविरचित टीकासहित, (३) वासुदेवकविविरचित वासुदेवविजय, स्वकृत टीकासहित, (४) धातुकाव्य टीकासहित, इतनीं काव्यें हैं.

एकादश गुच्छक—इसमें (१) श्रीदुर्वासविरचित त्रिपुरमहिमस्तोत्र, नित्यानंदविरचित टीकासहित, (२) खड्गशतक सटीक, (३) श्रीदक्षिणामूर्तिविरचित लोकोक्तिमुक्तावली, (४) श्रीनीलकण्ठदीक्षितप्रणीत आनन्दसागरस्तव, (५) श्रीलोलिम्बराजकृत हरिविलास, (६) गोस्वामिश्रीयुतजनार्दनभट्टप्रणीत श्रृङ्गारशतक, (७) दैवतश्रीसूर्यकविविरचित रामकृष्णविलोमकाव्य, स्वकृत टीकासहित, ७ काव्यें हैं. ... २ ० ० ६

द्वादश गुच्छक—इसमें (१) श्रीरामभद्रदीक्षितविरचित रामचापस्तव, (२) श्रीरामभद्रदीक्षितविरचित रामबाणस्तव, (३) कविवरनरहरिविरचित श्रृङ्गारशतक, (४) उत्प्रेक्षावल्लभकविविरचित भिक्षाटनकाव्य, ४ काव्यें हैं. २ ० ० ३

त्रयोदश गुच्छक—इसमें (१) श्रीमद्रामभद्रदीक्षितविरचित वर्णमालास्तोत्र, (२) श्रीमद्वादिचन्द्रनिर्मित पवनदूतकाव्य, (३) पण्डरीविट्ठलाख्यकविविरचित दूतीकर्मप्रकाश, (४) श्रीधनदराजकविविरचित शतकत्रयम् १ श्रृङ्गारधनदम् २ नीतिधनदम् ३ वैराग्यधनदम्, (५) गिरिधरविरचित गञ्जीफाखेलन, (६) तैलङ्गव्रजनाथविरचित मनोदूत (सहृदयहृदयाह्लादनापरनामक सटीक), (७) गोस्वामिजनार्दनभट्टप्रणीत वैराग्यशतक, (८) बिह्लणकविविरचित बिह्लणकाव्य, ये ८ हैं. २ ० ० ३

चतुर्दश गुच्छक—इसमें (१) कह्लणमहाकविकृत अर्धनारीश्वरस्तोत्र, (२) लल्लादीक्षितविरचित आनन्दमन्दिरस्तोत्र, (३) रामभद्रदीक्षितविरचित विश्वगर्भस्तव, (४) इन्दुदूत, (५) कृष्णानन्दकवीन्द्रविरचित सुदर्शनचम्पूकाव्य,

की.रु.आ. डा.रु.आ.

(६) कुसुमदेवविरचित दृष्टान्तकलिकाशतक, (७) कामराजदीक्षितविरचिता शृङ्गारकलिकात्रिशती, (८) हरिकृष्णभट्टविरचित सीतास्वयंवरकाव्य,(९) व्रजराजदीक्षितविरचित षड्तुवर्णनकाव्य, (१०) सामराजदीक्षितविरचिता शृङ्गारामृतलहरी, इतनीं काव्यें हैं. २ ० ० ३

गुच्छकोंके सिवाय काव्यमालामें जितने ग्रन्थ प्रसिद्ध हुए हैं वे सब नाटक, चम्पू इत्यादि विषयोंमें पहले आ चुके हैं, कृपया वहांभी अवश्य देखियेगा.

जैनग्रन्थ।

श्वेताम्बर जैनसम्प्रदायके उत्तमोत्तम ग्रन्थ।

अध्यात्मकल्पद्रुम.

काव्यानुशासन सटीक—यह महाकवि वाग्भट्टकृत अलंकारका ग्रंथ है। इसमें सब लक्षण गद्यमय सूत्रोंमें दिये हैं। इसकी टीका भी सविस्तर है। मूल्य १ रु. डा. ४ आने.

काव्यानुशासन–आचार्यहेमचन्द्रविरचित, स्वोपज्ञालंकारचूडामणिसंज्ञक-वृत्तिसहित. मू. ३॥ रु. डा. ८ आ.

काव्यमाला सप्तमगुच्छक–इसमें भक्तामर, कल्याणमंदिर, सिंदूरप्रकर आदि २३ स्तोत्र है। प्रत्येक स्तोत्र एकसे एक बढ़ियां है। मू. २ रु. डा. ३ आ.

जयन्तविजय—श्रीमदभयदेवविरचित. महाकाव्य. मू. १॥ रु. डा. ३ आ.

जैनस्तोत्ररत्नाकर—इसमें नित्यपाठ करनेयोग्य प्राकृत और संस्कृतके पाठ हैं। **प्रथम** नवकारस्मरण, **द्वितीय** उवसग्गहरस्मरण, **तृतीय** संतिकरस्तोत्र-स्मरण, **चतुर्थ** विजयपहुत्तस्मरण, **पंचम** नमिऊणस्मरण, **छठ्ठा** श्रीअजितशान्तिस्तवस्मरण, **सप्तम** भक्तामरस्मरण, **अष्टम** कल्याणमंदिरस्तोत्र, **नवम** बृहच्छान्तिस्तवनामक स्मरण इसप्रकार ९ स्मरण और जयतिहुअणस्तोत्र, जिनपञ्जरस्तोत्र, ग्रहशान्तिस्तोत्र, पार्श्वनाथका मंत्राधिराजस्तोत्र, ये स्तोत्र और यंत्रविधान आदि विषय हैं। मू. ८ आ. डा. २ आना.

जैनस्तोत्रसंग्रह—इसमें भक्तामर, कल्याणमंदिर, विषापहार, एकीभाव और जिनचतुर्विंशतिका ये ५ मूलस्तोत्र हैं। मू. ८ आ. डा. २ आना.

तिलकमञ्जरी—श्रीधनपालविरचित. गद्यकाव्यका कादम्बरीके जोड़का अपूर्व ग्रन्थ। मू. ३॥ रु. डा. ८ आ.

धर्मशर्माभ्युदय–यह काव्य महाकवि श्रीहरिचन्द्रकविरचित है, जिसमें मुख्य नायक धर्मनाथ नामक राजा है. उसका उत्पत्तीसे सुरस भाषामें वर्णन किया है. इसका २१ सर्ग है. मू. १॥ रु., डा. ४ आ.

नेमिनिर्वाणकाव्य—यह काव्य महाकवि वाग्भट्टकृत है। इसमें नेमिनाथ तीर्थंकर और राजीमतीका पवित्र चरित्र है। इसकी काव्यशैली अच्छी और सरल भी है। मू. १। रु., डा. ४ आ.

प्रभावकचरित—यह जैनोंका विद्वन्मान्य ग्रंथ है । जैनोंमें जो महानुभाव और कीर्तिमान कवि हो गये हैं और जिन्होंने सभापांडित्य–विद्वत्पराजय–ग्रंथरचना आदि महत्त्वके काम किये हैं, उनका चरित्र उत्तम रीतिसे संकलित किया गया है । संस्कृत और अंग्रेजीके एक नामी विद्वाननें जो कि जैन नहीं है, इसका सम्पादन किया है । मूल्य ३ रु. डा. ५ आना.

वाग्भटालंकार सटीक—महाकवि वाग्भटकृत अलंकारका ग्रंथ है। यह मूलग्रंथ पद्यमय है, इसकी संस्कृतटीका बहुत ही अच्छी है ।

—

हीरसौभाग्य—श्रीदेवविमलगणिविरचित, स्वोपज्ञव्याख्यासमलंकृत महाकाव्य । इसमें एक प्रसिद्ध जैनाचार्यका चरित्र लिखा गया है । तैयार नहीं.

दिगम्बर जैन सम्प्रदायके उत्तमोत्तम ग्रन्थ ।

काव्यमाला सप्तमगुच्छक–इसमें भक्तामर, कल्याणमंदिर, सिंदूरप्रकर आदि २३ स्तोत्र हैं. प्रत्येक स्तोत्र एकसे एक बढ़ियां है । मू. २ रु. डा. ३ आ.

काव्यमाला तेरहवां गुच्छक—इसमें वादिचन्द्रसूरिकृत पवनदूत काव्य (जैन) बहुत ही उत्तम है, जिसमें सुग्रीव और उसकी स्त्री सुताराके विरहका वर्णन है । इसके सिवाय धनदराज कवि (जैन) के शृंगार, नीति और वैराग्यशतक तथा अन्य वैष्णव कवियोंके विल्हणकाव्य आदि कई काव्य भी हैं । मूल्य २ रु. डा. ३ आ.

चन्द्रप्रभचरित—इस काव्यमें आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभभगवान्का पवित्र चरित्र है । महाकवि वीरनन्दिविरचित यह महाकाव्य पढने योग्य है । मूल्य २ रु. डा. ६ आ.

जैनस्तोत्रसंग्रह–इसमें भक्तामर, कल्याणमंदिर, विषापहार, एकीभाव और जिनचतुर्विंशतिका ये ५ मूलस्तोत्रें हैं । मू. ८ आ. डा. १ आना.

जैननित्यपाठसंग्रह—इसमें पंचस्तोत्र सहस्रनाम तत्त्वार्थसूत्रादि १६ पाठ दिगम्बरी श्वेताम्बरी दोनों प्रकारके जैनी भाइयोंके हितार्थ संग्रह किये हैं। रेशमी जिल्दका बहुत ही सुंदर गुटका है । मूल्य १॥ रु. डा. २ आना.

द्विसंधानमहाकाव्य सटीक—यह काव्य महाकवि धनंजयश्रेष्ठिविरचित है। इसके प्रत्येक श्लोकसे दो दो कथाओंका अर्थ निकलता है। अर्थात् एक अर्थमें रामचंद्रजीकी कथा और दूसरे अर्थमें पांडवोंकी कथा। यह महाकाव्य संस्कृतटीकासहित छपा है। संस्कृतसाहित्यप्रेमी विद्वानोंको अवश्य ही लेना अवश्य है।
तैयार नहीं.

प्रमेयकमलमार्तण्ड—(श्रीप्रभाचन्द्राचार्यविरचित) जैनदर्शनका यह बहुत ही विलक्षण और उच्चकोटिका न्यायग्रन्थ है। श्रीमाणिक्यनन्दि आचार्यका जो परीक्षामुख नामका प्रसिद्ध ग्रन्थ है, उसकी यह बृहद्वृत्ति है। इसके कर्ता धाराधीश महाराज भोजदेवके समयमें हुए हैं। अर्थात् यह न्यायग्रन्थ लगभग ८००–९०० वर्षोंका प्राचीन है। जैनधर्मके मान्य सिद्धान्तोंका इसमें बड़े ही पाण्डित्यके साथ निरूपण किया है। अन्यान्य धर्मोंका खंडन भी बड़ी प्रबल युक्तियोंसे किया गया है। यह श्रीहर्षके खंडनखंडखाद्यकी शैलीका अपूर्व ग्रन्थ है। प्रत्येक नैयायिक विद्वान्‌को यह अपूर्व ग्रन्थ अवलोकन करना चाहिये। बुकसाईझमें बहुत ही सुन्दरताके साथ छप रहा है। मू. ८ रु. डा. १२ आ.

यशस्तिलकचम्पूकाव्य—यह नीतिवाक्यामृतपूर्ण श्रीसोमदेवसूरिविरचित महाकाव्य है। इसमें यशोधर महाराजका पवित्र चरित्र है। इसका गद्य भी कादंबरीके गद्यको टक्कर लगानेवाला है। आचार्यवर्य श्रुतसागरकृत विस्तृत टीकासहित काव्यमालामें छपा है। परंतु उत्तरखंडके सरल भागकी संस्कृत टीका नहीं है। उत्तरखंडमें जैनधर्मका व्याख्यान भी बहुत उत्तम रीतिसे वर्णन किया गया है। इस कवीका भाषासौंदर्य, पदलालित्य एवं विषयवर्णन स्वान्तग्राहि है. जिसकी एक एक प्रति समस्त स्थानोंके सरस्वतीभांडारोंमें और पाठशालाओंमें रखनी चाहिये। मूल्य प्रथम खंडका ६ रु. ८ आ. डा. १२ आ.

यशस्तिलक द्वितीयखंड. —

सुभाषितरत्नसंदोह-यह ग्रंथ धर्मपरीक्षाके कर्ता अमितगत्याचार्यकृत मूल संस्कृत है। इसमें सांसारिकविषयनिराकरण, कोपनिराकरण, मायाहंकारनिराकरण, लोभनिराकरण, इन्द्रियनिग्रहोपदेश, स्त्रीगुणदोषविचार, सदसत्स्वरूपनिरूपण, ज्ञाननिरूपण, चारित्रनिरूपण, जातिनिरूपण, जरानिरूपण, मृत्युनिरूपण, सामान्यनित्यतानिरूपण, दैवनिरूपण, जठरनिरूपण, जीवसंबोधननिरूपण, दुर्जननिरूपण, सज्जननिरूपण, दाननिरूपण, मद्यनिषेधनिरूपण, मांसनिषेधनिरूपण,

मधुनिषेधनिरूपण, कामनिषेधनिरूपण, वेश्यासंगनिषेधनिरूपण, द्यूतनिषेधनिरूपण, आप्तविवेचन, गुरुस्वरूपनिरूपण, धर्मनिरूपण, शोकनिरूपण, शौचनिरूपण, श्रावकधर्मनिरूपण, द्वादशविधतपश्चरणनिरूपण, ग्रंथकर्तृप्रशस्ति, इस प्रकार ३३ विषय हैं। इनमेंसे श्रावकधर्मनिरूपण प्रायः १२५ श्लोकोंमें और द्वादशतप ३५ श्लोकोंमें है। शेष विषय बीस २ श्लोकोंसे कोई कम नहीं हैं। प्रत्येक विषयका निरूपण ऐसा विस्तृत किया है कि प्रत्येक श्लोक कंठाग्र रखनेको जी चाहता है, उपदेशकोंके बड़े ही कामका है। मूल्य १॥ रु., डा. ६ आ.

जैनस्तोत्रसमुच्चय.

अनेक जैनपूर्वाचार्यविरचित अपूर्व १२२ स्तोत्रें.

इस संग्रहमें बहोत प्राचीनकालसे बडे विद्वान् जैनमुनिवरोंने विरचित ऐसीं अनेक स्तोत्रें, अलंकार, यमक, प्रास, कमलबंधादि नानाविध बंधसाधित आर्यीं हैं. कितने एक स्तोत्रोंपर अर्थबोधक अवचूरी (टिप्पणी) है और कितनी मूलमात्र जैसी उपलब्ध हुई वैसीं जोड दी हैं. उनमेंके कमलबंधादिकोंका खुलासा होनेके वास्ते न्यारी न्यारी २५ सुंदर आकृति छपाकरके ग्रंथके अंतमें जोड दी हैं, इस समुच्चयसे जैनोंको अपूर्व लाभ होजायगा.

मू. २ रु., डाकखर्च ४ आने.

जैनसम्प्रदायशिक्षा।

अथवा

गृहस्थाश्रमशीलसौभाग्यभूषणमाला।

श्वेताम्बरधर्मोपदेष्टा यति श्रीश्रीपालचन्द्ररचित।

कीमत ६) रूपिया. डाक ख. १२ आने.

जैनधर्मसिंधु.

ए नामनो अति उत्तम ग्रंथ छपाई तयार छे, जेना आठ परिच्छेद करवामां आव्या छे.

१ प्रथम परिच्छेदमां सर्व गच्छनां प्रतिक्रमण छे.

२ बीजा परिच्छेदमां घणा चैत्यवंदनो तथा घणी स्तुतिओ तथा सर्व जातनी तपस्या करवानी विधि दाखल करेल छे.

३ त्रीजा परिच्छेदमां श्रावकदिनचर्या—दिनकृत्य-रात्रिकृत्य-मासकृत्य-वर्षकृत्य अने जन्मकृत्य विगेरेनी हकीकत छे.

४ चोथा परिच्छेदमां नाना मोटा प्राचीन कविओनां करेल एकसो स्तवननो आकार छे.

५ पांचमा परिच्छेदमां प्राचीन कविओनी करेल सज्झायो सो एकने आसरे छे.

६ छठा परिच्छेदमां सर्व स्तोत्रेंनो समावेश करवामां आवेल छे.

७ सातमा परिच्छेदमां साधुसाध्वीना आचारविचार तथा तेमना प्रतिक्रमण पख्खीसूत्र विगेरे दाखल करेल छे.

८ आठमा परिच्छेदमां जन्मथी ते मरणपर्यंतना सोळ संस्कार छे.

पुस्तक डेमी आठ पेजी, उमदा कागळ, एकसो अग्यार १११ फार्म पृष्ठसंख्या ८८८ छे. सुंदर पाका बाइंडिंगथी बांधेल छे. थोडी नकलो बाकी छे. **कीमत रु. ६. डा. ख. १२ आने.**

संस्कृत मूल और भाषाग्रंथ.

पुराण—भाषाग्रन्थ ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
एकादशीमाहात्म्य—(आगरानिवासी पंडित रामेश्वरभट्टकृत भाषाटीकासहित). इसमें २६ एकादशियोंके अलग अलग माहात्म्य, व्रतविधि और कथाएँ मौजूद हैं. .... ग्लेज	३	०	०	४
कार्तिकमाहात्म्य—(भाषाटीका).	३	०	०	८
श्रीमद्भागवत एकादशस्कंधभाषा—श्रीचतुरदासविरचित. इसमें एकादशस्कंधका संपूर्ण विषय भाषाके दोहे चौपाइयोंमें विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है.	१	०	०	४
सत्यनारायणकथा—(भाषा छंदोबद्ध).	०	२	०	१
सत्यनारायणपूजा और कथा—पं. रामेश्वरभट्टकृत हिंदी भाषाटीकासहित.	०	८	०	२
हरितालिकापूजा कथा—पं. रामेश्वरभट्टकृत हिंदी भाषाटीकासहित.				—

वेदान्तभाषाग्रन्थ ।

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
रामगीता—(ज्ञानप्रकाशिका नामकी भाषाटीका).	१	०	०	२
श्रीविचारदीपक—श्रीमत्परमहंस स्वामी ब्रह्मानंदजीकृत. मूल श्लोक संस्कृत, भाषाटीका. यह ग्रंथ वेदांतविषयका है. इसमें गुरुशिष्यके संवादद्वारा सर्व वेदांतशास्त्रोंका सार निरूपण है.				—

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
योगरसायन.	१	४	०	२
योगवासिष्ठ—(दो प्रकरणका भाषा.)	०	१२	०	२
श्रीमद्भगवद्गीता—(सुबोधकौमुदीनामक हिंदी भाषाटीकासहित) रेशमी जिल्द.	२	०	०	३
कपड़ेकी जिल्द.....	१	०	०	३
श्रीमद्भगवद्गीता—भगवद्गीतार्थप्रकाशिका नाम भाषाटीकासहित	२	०	०	४

धर्मशास्त्र—भाषाग्रन्थ ।

आशौचनिर्णय—(हिंदी भाषाटीकासहित).....	—
धर्मसिंधु—(हिंदी भाषाटीकासहित).	—
मनुस्मृति—पं. रामेश्वरभट्टकृत भाषाटीकासहित।	—

गद्य—भाषाग्रन्थ ।

हितोपदेश—(नारायणपंडितकृत) पंडितरामेश्वरभट्टकृत हिंदी भाषाटीकासहित.	३	४	०	१०

छन्दोग्रन्थ भाषा ।

श्रुतबोध—व्रजरत्नभट्टाचार्यकृत हिंदीभाषाटीका.	०	८	०	१

वैद्यक—भाषाग्रन्थ ।

वैद्यचन्द्रोदय—(भाषानुवादसहित) यह पुस्तक कविवर श्रीत्रिमल्लभट्टका बनाया है. इसमें ८२ ब्यासीं अवलोक (अध्याय)हैं. और प्रायः तीनसौ चालीस स्रग्धराछंदोंसे युक्त है. इसमें संपूर्ण रोगोंका निदान है. मथुराके एक पूज्यविद्वान्द्वारा इसका भाषानुवाद करवाया है.	१	०	०	२

की. रु. आ. डा. रु. आ.

ज्योतिष–भाषाग्रन्थ ।

दशामंजरी (भाषाटीका)

भाषाटीकोदाहरणोपेता च (ज्योतिषग्रंथ)

इसमें ९ प्रकरण हैं. १ भुक्ताभुक्तसाधन, २ विंशोत्तरीदशासाधन, ३ योगिनीदशासाधन, ४ रौद्राद्यष्टोत्तरीसाधन, ५ महादशा, ६ दशदशा, ७ कालचक्रीदशा, ८ विविधप्रकारदशासाधन, ९ अंतर्दशादिसाधन इतने विषय सप्रमाण कहे हैं. —

पञ्चाङ्गमञ्जूषा । (भाषाटीकोदाहरणसहिता)

इस अपूर्व ग्रंथमें दिनगणनद्वारा, सूर्यचंद्रगतिद्वारा, जीर्णपंचांगद्वारा, ऐसी तीन प्रकार गणना दिखाई है, और भाषाकारने सूत्रपञ्चाङ्गसारिणीसे चतुर्थ रीति बताई है. **कीमत १२ आना, डाकखर्च १ आना.**

मुहूर्तचिन्तामणि—पं. रामेश्वरभट्टकृत हिंदी भाषाटीका. —

मुकुन्दपद्धति ० १२ ० २

लीलावती—हिन्दी भाषानुवादसहित ।

पाटीगणित भागका भाषानुवाद हमने पं. **चम्पाराम मिश्र**, बी. ए., एम्. ए. एस्. बी. से संशोधन कराके प्रकाशित किया है. .... —

स्तोत्रभाषा.

यमुनाष्टकद्वय—संस्कृत और भाषाटीकासहित. ० २ ० १

संध्याविधि—यजुर्वेदी हिंदी सुबोध भाषाटीका. ० ६ ० १

शिवमहिम्न—भाषाटीका. ० ४ ० १

हनुमानचालीसा—(शनिपीडा परिहारके लिये)

इसमें संकटमोचन हनुमानाष्टक रामस्तुति और रामाष्टक भी है. मुखपृष्ठपर दुरंगी हनुमानजीका छायाचित्र दिया है. ० ३ ० १

हनुमानबाहुक ० २ ० १

की. रु. आ. डा. रु. आ.

शुकोक्ति-सुधा-सागर ।

अर्थात्

भागवतपुराणभाषा–गुटका

सम्पूर्ण, २५ चित्रोंसहित, पृष्ठसंख्या १३९४.
(यही शुकसागर, शुभसागर, और सुखसागर नामसे सब जगह प्रसिद्ध है)
लेखक–पण्डित रूपनारायण पाण्डेय
'नागरीप्रचारक' तथा 'निगमागमचन्द्रिका' के भूतपूर्व सम्पादक तथा 'सरस्वती' 'इन्दु' 'मनोरञ्जन' आदि पत्रोंके नियमित लेखक, हिन्दीके सुकवि और सुलेखक. कीमत १२ रुपिया, डा. ख. १। रु.

भाषाकाव्य

आगरानिवासी पण्डित रामेश्वरभट्टजीके द्वारा संशोधित और अनुवादित की हुई पुस्तकें.

तुलसीदासकृत रामायण सटीक-"पीयूषधारा" नामक हिंदी भाषाटीकासहित. .... —

तुलसीदासकृत रामायण–रफ कागजकी २ ० ० ९

तुलसीदासकृत रामायण—(सचित्र गुटका). २ ० ० ६

ब्रजविलास—सचित्र गुटका. पं. रामेश्वरभट्टजीके द्वारा संशोधित और परिवर्धित। इसमें कई कथा जो नहीं थीं वह क्षेपक रूपसे जोड़दी गई हैं। सुनेरी उत्तम जिल्दका यह गुटका मुसाफिरी करनेवालोंको अत्यंत उपयोगी है. २ ८ ० ६

अष्टांगसंग्रह—प्रथमभाग. मूल संस्कृत और हिंदी अनुवादयुक्त. ११ ० १ ०

कि. रु. आ. डा. रु. आ.

भारतीय विद्या भवन, बम्बई द्वारा पुरस्कृत

हमारे भोजनकी समस्या

लेखक **श्री अत्रिदेव गुप्त**, भूमिका-लेखकः–**राजेन्द्रप्रसादजी.** इस पुस्तकमें खानपानका निर्णय देश, काल, प्रकृति आदि बातें ध्यानमें लेकर किया गया है। अबतक इस विषय पर प्रकाशित किये गये किताब पाश्चिमात्य विद्वानोंके ग्रंथोंपर निर्भर हैं। इससे उनसे हमें काफी सहायता नहीं मिलती। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र-प्रसादजीने पुस्तकमें भूमिका लिखकर उसे अलंकृत किया है। **कीमत १॥। रु.**

द्रव्यगुणविज्ञान—पूर्वार्ध. वैद्य जादवजी त्रिक-मजी आचार्यसंकलित.	७	०	१	०
द्रव्यगुणविज्ञान— उत्तरार्ध. इसमें आर्य वैद्यकीय दृष्या द्रव्योंका गुणधर्म-विवेचन किया है.	३	८	०	८
„ २ रा भाग	१२	०	१	०
युनानी द्रव्यगुणविज्ञान—इसमें युनानीदृष्या द्रव्योंका गुणधर्म-विवेचन किया है.	२२	०	२	०

गुजराती पुस्तको.

आर्यधर्म	०	१२	०	३
श्रीमद्भगवद्गीता—गुजराती भाषांतर साथे.	१	०	०	२
सामुद्रिकशास्त्र—गुजराती भाषांतर साथे.	०	८	०	१
सत्यनारायण—गुजराती भाषांतर साथे.	१	१२	०	४

दाहविधि.

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अने सामवेद आ त्रणे वेदोनो और्ध्वदेहिक-विधि. आ ग्रंथो गुजराती ब्राह्मणोने घणो उपयोगी छे. आ त्रणे प्रयोगोमां दरेक ठेकाणे विधि तथा मंत्र लखीने ते पछी प्रत्येक कृत्यनो खुलासो गुजराती भाषामां स्पष्ट लख्यो छे.

ऋग्वेद षट्पिंड .... किंमत १२ आना. ट. ख. १ आ०

यजुर्वेद षट्पिंड .... किंमत १२ आना ट. ख. १ आ०

सामवेद षट्पिंड .... किंमत १२ आना ट. ख. १ आ०

काव्यमाला मासिक पुस्तकमें छपे हुये ग्रंथ.

	की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
१ **आर्यासप्तशती**—गोवर्धनाचार्यविरचित, अनंतपंडितकृत व्यङ्ग्यार्थदीपना टीकासहित. ...	२	०	०	४
२ **काव्यालंकार**—रुद्रटकृत, नमिसाधुकृत टीकासहित.	२	८	०	६
३ **श्रीकण्ठचरितकाव्यम्**—श्रीमङ्खकविकृत, जोनराजकृत टीकासहित. इसमें २५ सर्ग हैं, जिनमें सज्जनदुर्जन लोगोंका वर्णन, वसंतवर्णन, कैलासपर्वतवर्णन, शिववर्णनादि परममनोहर विषय वर्णित हैं.	३	८	०	१०
४ **कर्पूरमञ्जरीसट्टक**—राजशेखरकृत, वासुदेवकृत टीकासहित, और **बालभारतनाटक.** ...	२	८	०	४
५ **अनर्घराघवनाटक**—मुरारिकृत, रुचिपत्युपाध्यायकृत टीकासहित.	३	०	०	४
६ **कंसवधनाटक**—शेषकृष्णकृत.	०	१२	०	२
७ **कर्णसुन्दरीनाटिका**—महाकविश्रीबिह्लणकृत. ...	१	४	०	४
८ **धर्मशर्माभ्युदयकाव्य**—महाकवि**श्रीहरिचन्द्रविरचित.** इसमें २१ सर्ग हैं, और मुख्यनायक धर्मनाथ नामक राजाका जन्मसे वर्णन किया है.	१	८	०	४
९ **सुभद्राहरण श्रीगदित**—श्रीमाधवभट्टप्रणीत.	०	८	०	१
१० **समयमातृकाकाव्य**—क्षेमेन्द्रविरचित. ...	०	१४	०	२
११ **कादम्बरीकथासारकाव्य**—श्रीमदभिनन्दकृत.	१	०	०	२
१२ **रसगङ्गाधर**—(अलंकार) महाकवि**श्रीजगन्नाथपण्डितरायविरचित,** महामहोपाध्याय **नागेशभट्टकृत** टीका और पं० **मथुरानाथशास्त्री** इनकी बनाई हुई **'सरला'** टीकासहित.	१०	०	१	०
१३ **साम्बपञ्चाशिका**—साम्बकविप्रणीत, क्षेमराजकृत टीकासहित.	०	८	०	१
१४ **पारिजातहरणचम्पू**—शेषकृष्णविरचित. ...	०	१३	०	२
१५ **काव्यालंकारसूत्राणि**—वामनविरचित.				—

		की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
१९	**मुकुन्दानन्दभाण**—श्रीकाशीपतिविरचित. ...	०	१२	०	२
१७	**उन्मत्तराघवप्रेक्षाणक**—भास्करविविचिरत. ...	०	८	०	१
१८	**अमरुशतक**—अमरुककविविरचित, अर्जुनवर्मदेवप्रणीत रसिकसंजीविनीव्याख्यासहित. ...				—
१९	**सूर्यशतक**—मयूरकविविरचित त्रिभुवनपालव्याख्यासहित....				—
२०	**लटकमेलकप्रहसन**—शंखधरविरचित. ...				—
२१	**गाथासप्तशती**—हालोपनामकसातवाहनसंकलित. प्राकृतगाथासप्तशतीका छायारूप, भट्टश्रीमथुरानाथशर्मजीनें संग्रथित **संस्कृतगाथासप्तशती** निजनिर्मित व्यङ्ग्यसर्वंकषाख्यव्याख्यासंवलित. ...	४	८	०	१२
२२	**हरविजयमहाकाव्य**—राजानकरत्नाकरविरचित, राजानकअलककृत टीकासहित. इसमें ५० सर्ग हैं.	तैयार नहीं.			
२३	**स्तुतिकुसुमाञ्जलिकाव्य**—जगद्धरभट्टविरचित, राजानकरत्नकण्ठविरचित टीकासहित. ...	तैयार नहीं.			
२४	**काव्यप्रदीप**—महामहोपाध्यायश्रीगोविन्दविरचित, तत्सदुपाख्यवैद्यनाथकृतव्याख्यासहित. ...	३	०	०	६
२५	**ध्वन्यालोक**—आनंदवर्धनाचार्यविरचित, सटीक.				—
२६	**दशावतारचरितकाव्य**—क्षेमेन्द्रविरचित. ...	१	८	०	४
२७	**जीवानन्दनाटक**—इस छह अङ्कात्मक नाटकमें संसारसे जीव कैसे मुक्ति पाते हैं यह वर्णन किया है.	१	४	०	३
२८	**दूताङ्गदछायानाटक**—श्रीसुभटकविविरचित. इसमें रावणके साथ अङ्गदकृत धृष्टताका अच्छीतरह वर्णन किया है.	०	६	०	१
२९	**भर्तृहरिनिर्वेदनाटक**—श्रीहरिहरोपाध्यायकृत, इसके पांच अंक हैं; जिसमें राजा भर्तृहरीका स्त्रीविरह हृदयद्रावक रीतीसे कविने वर्णन किया है.	०	५	०	८
३०	**चन्द्रप्रभचरित**—महाकवि वीरनन्दिविरचित यह महाकाव्य देखने योग्यही है.	२	०	०	४
३१	**विष्णुभक्तिकल्पलता**—पुरुषोत्तमविरचित, महीधरविरचित टीकासहित.	१	०	०	१

		की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
३२	**सहृदयानन्दकाव्य**—कृष्णानन्दविरचित. इसमें १५ सर्ग हैं. विद्यार्थियोंको संस्कृतका व्युत्पत्तिलाभ करनेमें इसका बडा उपयोग है.	१	०	०	३
३३	**श्रीनिवासविलासचम्पू**—वेङ्कटेशकविप्रणीत, धरणीधरकृत टीकासहित.	१	४	०	२
३४	**प्राचीनलेखमाला**—(प्रथम भाग). ...	तैयार नहीं.			
३५	**अलंकारसर्वस्व**—टीकासहित.	२	०	०	४
३६	**वृत्तिवार्तिक**—श्रीमदप्पय्यदीक्षितप्रणीत. ...	०	६	०	१
३७	**रससदनभाण**—युवराजकविविरचित. ...	०	१४	०	२
३८	**चित्रमीमांसा**—श्रीमदप्पय्यदीक्षितप्रणीत-**चित्रमीमांसाखण्डन**-पण्डितराज-जगन्नाथविरचित.	१	८	०	३
३९	**विद्यापरिणय**—आनन्दरायमखिविरचित. ...	०	१२	०	१
४०	**रुक्मिणीपरिणयनाटक**—श्रीरामवर्मवञ्चियुवराजविरचित.	०	१२	०	२
४१	**प्राकृतपिङ्गलसूत्राणि**.	—			
४२	**नाट्यशास्त्र**—(भरतकृत) इस विषयपर यह उच्च श्रेणीका ग्रंथ है.	१०	०	०	८
४३	**काव्यानुशासन**—श्रीमद्वाग्भटविरचित, स्वकृत टीकासहित.	१	०	०	२
४४	**शृङ्गारतिलकभाण**—श्रीरामभद्रदीक्षितविरचित.	०	८	०	१
४५	**बालभारतकाव्य**—श्रीमदमरचन्द्रसूरिविरचित, टिप्पणीसहित. इसमें महाभारतकी तरह १८ पर्व हैं.	तैयार नहीं.			
४६	**वृषभानुजानाटिका**—श्रीमथुरादासविरचित....	०	१२	०	१
४७	**सेतुबन्धमहाकाव्य**—श्रीप्रवरसेनविरचित, श्रीरामदासभूपतिप्रणीत टीकासहित.	४	८	०	८
४८	**वाग्भटालंकार**—श्रीवाग्भटप्रणीत, सिंहदेवगणिविरचित टीकासहित.	—			
४९	**द्विसंधानमहाकाव्य सटीक**—यह काव्य महाकवि धनंजयश्रेष्ठिविरचित है.	तैयार नहीं.			
५०	**अलंकारशेखर**—श्रीकेशवमिश्रकृत.... ...	१	०	०	३

		की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
५१	**पतञ्जलिचरित**—श्रीरामभद्रदीक्षितप्रणीत. ...	०	१४	०	२
५२	**मन्दारमरन्दचम्पू**—कृष्णकविविरचित, माधुर्य-रञ्जनीनामक टीकासहित....	२	०	०	४
५३	**वाणीभूषण**—श्रीदामोदरमिश्रविरचित. ...	०	१२	०	४
५४	**धनंजयविजय**—श्रीकाञ्चनाचार्यविरचित. ...	०	६	०	१
५५	**अद्भुतदर्पणनाटक**—महादेवविरचित. ...	१	०	०	२
५६	**नेमिनिर्वाणकाव्य**—महाकविवाग्भट्टकृत. ...	१	४	०	३
५७	**राघवनैषधीयकाव्य**—हरदत्तसूरिकृत, स्वकृत-टीकासहित.	१	०	०	१
५८	**शृङ्गारभूषणभाण**—वामनभट्टबाणविरचित. ...	०	६	०	१
५९	**अमृतोदयनाटक**—गोकुलनाथकृत. ...	०	१२	०	२
६०	**युधिष्ठिरविजय**—महाकवि श्रीवासुदेवविरचित.	३	०	०	८
६१	**हरचरितचिन्तामणिकाव्य**–राजानकजयरथकृत.	३	०	०	८
६२	**राघवपाण्डवीयकाव्य**—कविराजविरचित—शशधरकृत (प्रकाश) टीकासहित. ...	तैयार नहीं.			
६३	**साहित्यकौमुदी**—विद्याभूषणविरचित, कृष्णा-नन्दिनीनामक टीकासहित.	तैयार नहीं.			
६४	**प्राचीनलेखमाला**—(द्वितीय भाग). ...	तैयार नहीं.			
६५	**भारतमञ्जरीकाव्य**—महाकविश्रीक्षेमेन्द्रविरचित.				—
६६	**अलंकारकौस्तुभ**—(अलंकार) श्रीविश्वेश्वरपण्डित-विरचित, स्वोपज्ञव्याख्यासहित.				—
६७	**हीरसौभाग्य**—श्रीदेवविमलगणिविरचित. ...	तैयार नहीं.			
६८	**रावणार्जुनीयकाव्य**–काश्मीरी श्रीभट्टभीमविरचित.	२	०	०	३
६९	**बृहत्कथामञ्जरी**—श्रीक्षेमेन्द्रविरचित. ...	८	०	०	८
७०	**यशस्तिलक**—श्रीसोमदेवसूरिविरचित, श्रीश्रुत-सागरसूरिकृत व्याख्यासहित (पूर्वखण्ड.) ...	६	८	०	१२
७०	**यशस्तिलक**—श्रीसोमदेवसूरिविरचित, श्रीश्रुत-सागरसूरिकृत व्याख्यासहित (उत्तरखण्ड.) ...				—
७१	**काव्यानुशासन**—आचार्यहेमचन्द्रविरचित, स्वोपज्ञालंकारचूडामणिसंज्ञकवृत्तिसहित. ...	३	८	०	८
७२	**कथाकौतुक**—पण्डितश्रीवरविरचित. ...				—

		की. रु.	आ.	डा. रु.	आ.
७३	**सुरथोत्सव**—श्रीसोमेश्वरदेवविरचित. ...	१	४	०	३
७४	**सौगन्धिकाहरण**—विश्वनाथकृत टिप्पणीयुक्त.	०	८	०	१
७५	**जयन्तविजय**—श्रीमदभयदेवविरचित. ...	१	८	०	३
७६	**गङ्गावतरण**—श्रीनीलकण्ठदीक्षितविरचित. ...	०	१२	०	२
७७	**देलरामाकथासार**—राजानकभट्टाह्लादकविविरचित.	०	१२	०	२
७८	**शृङ्गारसर्वस्वभाण**—श्रीनल्लाकविविरचित. ...	०	१०	०	२
७९	**कर्णभूषण**—श्रीगङ्गानन्दकविराजप्रणीत. ...	१	०	०	२
८०	**प्राचीनलेखमाला**—(तृतीय भाग.) ...				—
८१	**विदग्धमाधव**—श्रीरूपगोस्वामिप्रणीत (सटीक.)	२	०	०	२
८२	**सुभाषितरत्नसंदोह**—श्रीमदमितगतिविरचित.	१	८	०	६
८३	**रामायणमञ्जरी**—क्षेमेन्द्रविरचित.	८	०	०	८
८४	**स्तवमाला**—श्रीरूपदेवविरचित, श्रीजीवदेवविरचितभाष्यसहित.	३	०	०	४
८५	**तिलकमञ्जरी**—श्रीधनपालविरचित.... ...	३	८	०	८
८६	**हरिहरसुभाषित**—श्रीहरिहरप्रणीत. यह अत्युत्तम सुभाषितग्रंथ है.	०	१२	०	२
८७	**चैतन्यचन्द्रोदयनाटक**—श्रीकविकर्णपूरविरचित इसके १० अंक हैं. यह बहुत उत्तम है. ...	३	८	०	६
८८	**अन्योक्तिमुक्तावली**—हंसविजयगणिसमुच्चित.				—
८९	**पद्यरचना**—अङ्कोलकरश्रीलक्ष्मणभट्टविरचित. ...				—
९०	**यात्राप्रबन्ध**—समरपुंगवदीक्षितविरचित. ...	२	०	०	४
९१	**छन्दःशास्त्र**—पिङ्गलाचार्यविरचित.	३	०	०	८
९२	**पादुकासहस्र**—वेङ्कटरङ्गनाथदेशिकप्रणीत, श्रीनिवासकृतपरीक्षाख्यव्याख्यासहित. ...				—
९३	**पाण्डवचरित**—श्रीमलधारिदेवप्रभसूरिविरचित.				—
९४	**सरस्वतीकण्ठाभरण**—श्रीभोजदेवविरचित. १–३ परिच्छेदमें रामसिंहविरचित टीका और ४ परिच्छेदमें जगद्धररचित टीका, ऐसी दो टीकाएँ जोड दियें है.	७	०	१	०
९५	**उज्ज्वलनीलमणि**—श्रीमद्रूपगोस्वामिप्रणीत, श्रीमद्विश्वनाथविरचित आनन्दचन्द्रिकाव्याख्या व श्रीजीवगोस्वामिविरचित लोचनरोचनाव्याख्यासहित.	४	०	१	०

श्रीगणेशाय नमः ।

बुधाः कर्णे कुर्वन्त्वनिशमिदमर्थ्यं मम वचो
मुहुर्विद्यावृद्ध्यै सुललिततरो ग्रन्थनिवहः ।
मयाऽऽनङ्क्ति प्रायः सकलसुलभो भूरिफलदो
भवद्ग्रन्थागारे विलसतु न याचेऽहमितरत् ॥ १ ॥

आस्तां सुरासुरविलोडितसागरोत्थं
पीयूषमुख्यममराहृतरत्नजातम् ।
ग्रुस्थं नृदुर्लभमतः सुलभं निबन्ध-
रत्नाद्वयं जुषत निर्णयसागरोत्थम् ॥ २ ॥

वेदशास्त्रपुराणेतिहासकाव्यान्यनेकशः ।
योग्यमूल्येन दास्यन्ते ग्रन्था निर्णयसागरे ॥ ३ ॥

---

*सूचीपत्रकी अनुक्रमणिका ।

सं०	विषय	पृष्ठ.	सं०	विषय	पृष्ठ.
१	वेदग्रन्थ	१	१५	नाट्यशास्त्रग्रन्थ	२६
२	कर्मकाण्डग्रन्थ	२	१६	चम्पूग्रन्थ	२६
३	पुराण–इतिहासग्रन्थ ...	६	१७	भाणग्रन्थ	२७
४	वेदान्तग्रन्थ	७	१८	अलंकारग्रन्थ	२७
५	धर्मशास्त्रग्रन्थ	१२	१९	वैद्यकग्रन्थ...	२९
६	न्यायशास्त्रग्रन्थ	१३	२०	ज्योतिषग्रन्थ	३०
७	मीमांसाग्रन्थ	१५	२१	स्तोत्रग्रन्थ...	३१
८	व्याकरणग्रन्थ	१६	२२	प्रकीर्णग्रन्थ	३४
९	निरुक्तग्रन्थ	१८	२३	अंग्रेजी नोट्सकी पुस्तकें ...	३५
१०	कोशग्रन्थ	१८	२४	काव्यमाला (मासिकपुस्तक)	३७
११	काव्यग्रन्थ...	१९	२५	जैनग्रन्थ	४२
१२	गद्यग्रन्थ	२३	२६	हिंदी संस्कृत और भाषाग्रंथ	४७
१३	छन्दोग्रन्थ...	२४	२७	हिंदी भाषाकाव्य	५०
१४	नाटकग्रन्थ	२४	२८	गुर्जरभाषाकी पुस्तकें ...	५१

*अप्राप्य ग्रंथके सामने — ऐसी लकीर रक्खी है.

४ प्रत्येक बुकसेलरको हमारे यहांसे एक बार पुस्तकें मंगाकर इसका अनुभव करना चाहिये कि हमारे यहांसे माल मंगानेमें कैसी किफायत होती है और कैसा माल मिलता है ।

५ जो महाशय वी. पी. मंगाकर नहीं लेंगे उनको उस पार्सलका खर्चा देना होगा । यदि वे खर्चा न देंगे तो दूसरी बार उनको पुस्तकें नहीं भेजी जायँगी ।

६ प्रत्येक ग्राहकसे यह निवेदन है कि, अन्य छापखाने या दुकानकी पुस्तकें मंगानी हों तो उनका दाम मनीऑर्डरसे पहले भेजना चाहिये । विना पेशगी बहारकी पुस्तकें न भेजीं जायँगी ।

७ यदि किसी पुस्तकका पार्सल भेजनेमें, भावमें या अन्य किसी तरहसे, भूल होगयी हो तो पार्सलका नंबर और चिट्ठीका नंबर जो पार्सलपर रहता है वह लिख भेजें, जिससे भूलकी दुरुस्ती कर दी जायगी । एक रुपयासे कम कीमतकी वी. पी. नहीं भेजी जायगी । एक रुपयासे कम कीमतका पुस्तक मँगानेवालेको पत्रके साथ ही पुस्तकोंका दाम पहलेसेही भेजना होगा ।

मैनेजर,

निर्णयसागर छापखाना,

२६–२८, कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २.